RNI No UPHIN/2015/65982

₹10

समाज जागरण का शंखनाद

# अवध प्रहरी

वर्ष : 12 अंक : 06 16-31 मार्च 2026

## जिहादियों के निशाने पर जनजातीय महिलाएँ

सम्पादकीय

# सामाजिक दायित्व का निर्वहन करें

अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच चल रहे युद्ध का वैश्विक प्रभाव दिखने लगा है। ईरान द्वारा अपने क्षेत्र से जहाजों को न गुजरने देने के चलते इसका असर कई देशों में रसोई गैस की आपूर्ति और कीमतों पर भी दिखायी देने लगा है। अपना देश भी इससे प्रभावित हुआ है। फिर भी सरकार ने विश्वास दिलाया है कि निकट भविष्य के लिये चिन्ता की कोई बात नहीं है और तेल-गैस का पर्याप्त भण्डार है। फिर भी देश विरोधी तत्व लोगों की परेशानी बढ़ाने में लगे है। युद्ध या युद्ध जैसी स्थिति में बाजार में सबसे पहले भय और अनिश्चितता का माहौल बनता है। यही भय कई बार वास्तविक संकट से पहले ही कृत्रिम संकट पैदा कर देता है। जैसे ही अन्तरराष्ट्रीय बाजार में ऊर्जा कीमतों के बढ़ने की खबरें आती हैं, स्थानीय स्तर पर कुछ लोग गैस सिलेण्डर की जमाखोरी शुरू कर देते हैं। इसका उद्देश्य बाद में ऊँचे दामों पर इन्हें बेचकर मुनाफा कमाना होता है। परिणामस्वरूप आम उपभोक्ता को गैस की कमी और अधिक कीमतों का सामना करना पड़ता है। भारत जैसे देश में रसोई गैस केवल एक ईंधन नहीं बल्कि करोड़ों परिवारों के दैनिक जीवन का आधार है।

सरकार की उज्ज्वला जैसी योजनाओं के बाद गैस का उपयोग गाँवों और गरीब परिवारों तक भी व्यापक रूप से पहुँचा है। ऐसे में यदि कालाबाजारी के कारण सिलेण्डर की उपलब्धता प्रभावित होती है, तो इसका सबसे अधिक असर गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों पर पड़ता है। कई बार उपभोक्ताओं को अपनी बुकिंग के बावजूद समय पर सिलेण्डर नहीं मिल पाता, जबकि उसी गैस को बाजार में अधिक कीमत पर बेचा जाता है। ईरान से जुड़े सम्भावित युद्ध का असर केवल आपूर्ति पर ही नहीं, बल्कि वैश्विक ऊर्जा परिवहन मार्गों पर भी पड़ सकता है। विशेष रूप से होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर यदि तनाव बढ़ता है, तो तेल और गैस के जहाजों की आवाजाही प्रभावित हो सकती है। इसका सीधा प्रभाव अन्तरराष्ट्रीय कीमतों पर पड़ता है, जिसका असर अन्ततः घरेलू बाजारों तक पहुँचता है। यही वह स्थिति होती है, जिसका फायदा कालाबाजारी करने वाले लोग उठाने की कोशिश करते हैं। रसोई गैस की कालाबाजारी केवल आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय का भी प्रश्न है। जब संकट की स्थिति में कुछ लोग आवश्यक वस्तुओं को छिपाकर या अधिक कीमत पर बेचते हैं, तो वे समाज के कमजोर वर्गों के अधिकारों का हनन करते हैं। ऐसे समय में प्रशासन और सरकार की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है कि वह बाजार की स्थिति पर कड़ी नजर रखे। आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी और कालाबाजारी को रोकने के लिये कानून पहले से मौजूद हैं, लेकिन उनका प्रभावी क्रियान्वयन भी उतना ही जरूरी है।

स्थानीय प्रशासन को गैस एजेन्सियों और वितरण प्रणाली की नियमित निगरानी करनी चाहिये। यदि कहीं भी कृत्रिम कमी पैदा करने या अवैध रूप से सिलेण्डर बेचने की शिकायत मिलती है, तो तुरन्त सख्त कार्रवाई होनी चाहिये। इससे न केवल कालाबाजारी पर रोक लगेगी, बल्कि आम उपभोक्ताओं का भरोसा भी बना रहेगा। इसके साथ ही उपभोक्ताओं की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कई बार अफवाहों के कारण लोग जरूरत से ज्यादा गैस सिलेण्डर जमा करने लगते हैं। यह प्रवृत्ति भी बाजार में अनावश्यक दबाव पैदा करती है इसलिये लोगों को संयम और जिम्मेदारी के साथ व्यवहार करना चाहिये और केवल जरूरत के अनुसार ही गैस की बुकिंग करनी चाहिये। अन्ततः यह समझना आवश्यक है कि अन्तरराष्ट्रीय संघर्षों का असर स्थानीय बाजारों तक पहुँच सकता है, लेकिन उस प्रभाव को किस हद तक बढ़ने दिया जाये, यह काफी हद तक हमारी व्यवस्था और सामाजिक जिम्मेदारी पर निर्भर करता है। यदि प्रशासन सतर्क रहे और समाज जिम्मेदारी से व्यवहार करे, तो युद्ध जैसी वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद रसोई गैस जैसी आवश्यक वस्तुओं की कालाबाजारी पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सकता है।। ●

समाज जागरण का शंखनाद

# अवध प्रहरी

पाक्षिक

वर्ष : 12 अंक : 06

RNI. No. UPHIN/2015/65982

**सम्पादक**

शिवबली विश्वकर्मा

**सम्पादक मण्डल**

डॉ. अनूप आनन्द

सुरेश सिंह

विवेक रॉय

मृत्युंजय दीक्षित

**कार्यालय**

संस्कृति भवन
राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

**ई-मेल**

avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ दूरभाष +91- 6389500007, 9151522252 से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ से प्रकाशित।

Scan & Subscribe

## अनुक्रम

जिहादियों के निशाने पर जनजातीय महिलाएँ 04

स्वधर्म से स्वदेश तक : नयी पीढ़ी की वैचारिक... 07

मुसलमानों की निष्ठा पर प्रश्न चिन्ह 08

युग प्रवर्तक स्वतंत्रता सेनानी डॉ. हेडगेवार 10

किसी भी स्थान पर नमाज पढ़ने का धार्मिक... 11

शताब्दी वर्ष में संघ का हो रहा संगठन विस्तार 12

धर्म का स्वरूप : अग्नि–वशिष्ठ संवाद के अंश... 15

दिन के आठ प्रहर और उनके राग 14

ब्रीमैटो एवं पोमैटो : सम्भावनाओं की आधुनिक... 15


## सुभाषित

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

(गीता, अध्याय-2, श्लोक- 63)

क्रोध से मनुष्य की मति-बुद्धि मारी जाती है अर्थात मूढ़-कुंद हो जाती है। इससे स्मृति भ्रमित हो जाती है। स्मृति-भ्रम हो जाने से मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि का नाश हो जाने पर मनुष्य खुद अपना ही का नाश कर बैठता है।।

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

**अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास**

खाता संख्या : 02510210002360
आई एफएससी : UCBA0000251
यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ

**पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि**

| | |
|---|---|
| वार्षिक सदस्यता | ₹ 200 |
| 12 वर्षीय सदस्यता | ₹ 1000 |
| आजीवन सदस्यता | ₹ 2000 |

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

# जिहादियों के निशाने पर जनजातीय महिलाएँ

उत्तर प्रदेश के जनजाति बहुल इलाकों में लैण्ड-जिहाद के कई मामलों का खुलासा हुआ है। जनजातियों की जमीनों पर कब्जा करने वालों ने खुद यह बात कबूल की। सोनभद्र, मिर्जापुर, चन्दौली, लखीमपुर खीरी और बहराइच जैसे जिलों में मुस्लिमों द्वारा आदिवासियों की जमीनों पर कब्जा करने के लिये अलग-अलग तरीके अपनाये जा रहे हैं।

कहीं जनजाति महिलाओं से शादी कर उनके नाम पर जमीन खरीदी जा रही है, कहीं दबाव और धमकी देकर धर्म-परिवर्तन व निकाह के लिये मजबूर किया जा रहा है, तो कहीं लालच देकर उनके नाम पर जमीन की रजिस्ट्री कर कब्जा कर लिया जाता है। अकेले सोनभद्र जिले में ऐसे 100 से अधिक मामले सामने आये हैं। इन मामलों की पड़ताल में जमीन कब्जाने के चार प्रमुख पैटर्न सामने आये हैं- रेप के बाद शादी, धमकी देकर निकाह का दबाव, लव-मैरिज, लालच देकर जमीन खरीदना।

## रेप करके बनाते हैं शादी का दबाव फिर लैण्ड-जिहाद

दुद्धी इलाके में सामने आया सबसे चर्चित मामला बहादुर अली का है। उसने एक जनजाति महिला से दुष्कर्म किया और बाद में उससे कोर्ट मैरिज कर ली। इसके बाद उसने उस महिला के नाम पर जमीन खरीदना शुरू कर दिया। बहादुर अली का कहना है कि उसकी पहली शादी 1969 में हुई थी और दूसरी शादी 1986 में जनजाति महिला से हुई। उसने बताया कि जमीन के विवाद के कारण उस पर रेप का आरोप लगाया गया था। बहादुर अली के अनुसार जब मामला थाने तक पहुँचा तो उसने अपने लोगों से सलाह ली। उसे बताया गया कि अगर वह उस महिला से कोर्ट मैरिज कर ले तो कानूनी कार्रवाई से बच सकता है। इसके बाद उसने शादी कर ली। उसने बताया कि शादी के समय महिला का नाम दुलरिया था, जिसे बाद में रजिया कर दिया गया। बाद में जब कनहर परियोजना के तहत विस्थापन और मुआवजे की प्रक्रिया शुरू हुई तो 2012 में जाति-प्रमाणपत्र बनवाया गया और 2013 से जमीन खरीदने का सिलसिला शुरू हुआ। स्थानीय लोगों ने बताया कि बहादुर अली ने अपनी पत्नी के नाम पर कई जगह जमीन खरीदी और बाद में वहाँ अपने रिश्तेदारों या परिचितों को बसाने लगा।

### दुद्धी बना लैण्ड-जिहाद का केन्द्र

सोनभद्र जिले का दुद्धी कस्बा और इसके आसपास के गाँव इन लैण्ड-जिहाद का केन्द्र बन गया है। यहाँ बघाड़, अमवार, सुन्दरी और आसपास के कई गाँवों में जनजाति जमीनों को लेकर विवाद सामने आये हैं। स्थानीय लोगों के मुताबिक करीब 20 साल पहले यहाँ करीब 60 मुस्लिम परिवार रहते थे, लेकिन अब इनकी संख्या 200 से अधिक है।

स्थानीय लोगों का दावा है कि यह बढ़ोतरी केवल आबादी बढ़ने से नहीं बल्कि जमीनों के

हस्तान्तरण और कब्जे से भी जुड़ी है। कई मामलों में जमीन का मालिकाना हक जनजाति परिवारों के नाम पर है, लेकिन उस पर कब्जा दूसरे लोगों का है।

## पत्नी के नाम पर खरीदा जमीन

बहादुर अली से जुड़ा एक और मामला सामने आया, जिसमें एनुल हक नाम का व्यक्ति शामिल है। एनुल हक ने बताया कि वह बहादुर अली का भांजा है और अमवार गाँव का रहने वाला है।

उसका कहना है कि बहादुर अली ने जमीन खरीदने के बाद उसे वहाँ रहने के लिए जगह दी थी। हालाँकि जब इस मामले में विवाद बढ़ा तो उसने वह जगह छोड़ दी और वापस अपने गाँव चला गया।

इस मामले से यह सामने आया कि जमीन भले ही किसी जनजाति महिला के नाम पर खरीदी गयी हो, लेकिन उसका इस्तेमाल दूसरे लोग कर रहे थे।

## धमकी देकर निकाह व धर्म-परिवर्तन

दुद्धी इलाके में एक जनजाति युवती ने थाने में शिकायत दर्ज करायी कि कुछ लोग उसे धर्म परिवर्तन कर निकाह करने के लिये मजबूर कर रहे थे।

पीड़िता के अनुसार जब वह कॉलेज जाती थी तो कुछ लोग उसका पीछा करते थे और कहते थे कि अगर वह उनके परिवार में शादी कर ले तो उसे घर बनाकर दिया जायेगा और पैसे भी दिये जायेंगे।

युवती का कहना है कि जब उसने इनकार किया तो उसे जान से मारने की धमकी दी गयी। डर के कारण उसने पढ़ायी भी छोड़ दी।

पीड़िता का आरोप है कि जिन लोगों ने उस पर दबाव बनाया, उनका मकसद उसके नाम पर जमीन खरीदना था, ताकि बाद में उस जमीन का इस्तेमाल दूसरे लोगों को बसाने के लिये किया जा सके।

## लालच देकर लैण्ड-जिहाद

कुछ मामलों में जमीन हासिल करने के लिये लालच का तरीका भी अपनाया गया। इसमें जनजाति महिलाओं को थोड़ी रकम देकर उनके नाम पर जमीन की रजिस्ट्री करायी जाती है।

बघाड़ू गाँव के लंगड़ी मोड़ पर पाँच बिस्वा जमीन का मामला इसका उदाहरण बताया जाता है। जमीन की रजिस्ट्री जनजाति महिला कुन्ती जगते के नाम पर है, लेकिन उस पर कब्जा गुलाम सरवर का है।

## प्रेम विवाह और लैण्ड-जिहाद

जाँच में यह भी सामने आया कि कुछ मामलों में प्रेम विवाह के जरिए जमीन हासिल की गयी। बघाड़ू गाँव में सिराजुद्दीन नाम के व्यक्ति का मामला सामने आया। उसने पहले मुस्लिम महिला से शादी की थी और बाद में एक जनजाति महिला से विवाह किया। पता चला कि जनजाति महिला के नाम पर अलग-अलग जगहों पर कई प्लॉट खरीदे गये थे। हालाँकि कुछ साल पहले सिराजुद्दीन की मौत हो चुकी है। जब इस मामले की पड़ताल की गयी तो पता चला कि उस महिला के नाम पर करीब सात प्लॉट दर्ज हैं। परिवार के लोग इस मामले में ज्यादा जानकारी देने से बचते नजर आये।

स्थानीय लोगों का कहना है कि कई बार जनजाति महिलाओं को कुछ रकम देकर उनके नाम पर जमीन की रजिस्ट्री करा ली जाती है और बाद में उस जमीन पर कब्जा कर लिया जाता है।

एक स्थानीय व्यक्ति के अनुसार चार लाख रुपये की जमीन के बदले जनजाति महिला को करीब 50 हजार रुपये दिये जाते हैं।

## मिर्जापुर में भी सामने आये जमीन कब्जे के विवाद

सोनभद्र के पड़ोसी जिले मिर्जापुर में भी जनजाति जमीनों को लेकर विवाद सामने आये हैं। यहाँ के पहाड़ी और वन क्षेत्रों में रहने वाले जनजाति परिवारों की जमीनों को लेकर कई बार शिकायतें दर्ज हुई हैं। स्थानीय संगठनों का आरोप है कि कुछ लोग जनजाति महिलाओं से शादी कर उनके नाम पर जमीन खरीदने की कोशिश करते हैं। हालाँकि कई मामलों में प्रशासन ने जाँच के बाद कार्रवाई भी की है। कुछ मामलों में यह भी सामने आया कि जमीन जनजाति परिवार के नाम पर है लेकिन उस पर खेती या निर्माण कार्य दूसरे लोग कर रहे हैं।

## चन्दौली के नौगढ़ क्षेत्र में भी विवाद

चन्दौली जिले के नौगढ़ और आसपास के जनजाति इलाकों में भी जमीन को लेकर विवाद सामने आये हैं। यहाँ भी आरोप लगाये गये कि कुछ लोग जनजाति महिलाओं के नाम पर जमीन खरीदने की कोशिश कर रहे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई बार बाहरी लोग जनजाति

परिवारों से सम्पर्क करते हैं और उन्हें पैसे या अन्य लालच देकर जमीन के सौदे करने की कोशिश करते हैं। कुछ मामलों में यह भी आरोप लगाया गया कि जमीन किसी जनजाति के नाम पर खरीदी जाती है, लेकिन उसका असली नियंत्रण दूसरे लोगों के पास होता है।

## लखीमपुर में भी सामने आये विवाद

लखीमपुर खीरी जिले के तरायी इलाके में भी जनजाति जमीनों को लेकर विवाद सामने आये हैं। यहाँ थारू जनजाति के लोग बड़ी संख्या में रहते हैं। स्थानीय संगठनों का कहना है कि कई बार बाहरी लोग जनजाति परिवारों से सम्पर्क कर जमीन खरीदने की कोशिश करते हैं। हालाँकि इन मामलों में प्रशासन ने कई बार रजिस्ट्री रोकने या जाँच करने की कार्रवाई भी की है।

## गाँव के लोगों ने क्या कहा

दुद्धी इलाके में होटल चलाने वाले भोला नाम के व्यक्ति का कहना है कि यहाँ कई लोग जनजाति महिलाओं से शादी कर जमीन खरीद चुके हैं। उनका कहना है कि जब किसी व्यक्ति को इस तरीके से जमीन हासिल करने में सफलता मिल जाती है, तो वह इसे व्यवसाय बना लेता है। भोला के अनुसार कई लोग विवादित जमीनें खरीदते हैं और बाद में उन पर कब्जा करने की कोशिश करते हैं। इससे स्थानीय लोगों और जनजातियों के बीच विवाद भी बढ़ जाते हैं।

## कतर्नियाघाट इलाके में शिकायतें

बहराइच जिले के कतर्नियाघाट और आसपास के क्षेत्रों में भी जमीनों को लेकर विवाद सामने आए हैं। यहाँ रहने वाले कुछ जनजाति परिवारों ने आरोप लगाया कि बाहरी लोग उनकी जमीनों को खरीदने या कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं। वन विभाग ने 2025 में 185 परिवारों को नोटिस जारी किया, जिसमें कहा गया कि वे लोग वन भूमि पर रह रहे हैं। स्थानीय प्रशासन का कहना है कि अनुसूचित जनजाति की जमीनों के हस्तान्तरण पर कानून के तहत कड़े नियम लागू हैं और यदि किसी भी तरह की अवैध खरीद-फरोख्त सामने आती है तो कार्रवाई की जाती है।

## प्रशासन कर रहा जाँच

इन मामलों को लेकर प्रशासन की ओर से जाँच की जा रही है। सोनभद्र के जिलाधिकारी बद्रीनाथ सिंह ने इस मामले पर विस्तृत टिप्पणी करने से इनकार किया है। वहीं पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा का कहना है कि सामने आए मामलों की जाँच की जा रही है। यदि किसी भी मामले में कानून का उल्लंघन पाया जाता है, तो सम्बन्धित लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी। विशेषज्ञों का कहना है कि जनजाति समुदाय आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण कई बार लालच या दबाव का शिकार हो जाता है। ऐसे में उनकी जमीनों की सुरक्षा सुनिश्चित करना प्रशासन की बड़ी जिम्मेदारी बन जाती है। ●

# दिव्यताओं का एकात्म उत्सव

भारतीय कालगणना का प्रारम्भ विधाता की सृष्टि-रचना प्रथम दिवस से होता है। सृष्टि का यही प्रथम दिवस युगादि कहा जाता है। धर्मशास्त्रों के अनुसार इस तिथि को महत्त्व देते हुए ब्रह्माजी ने प्रथम स्थान पर रखा, अतः इसका नाम 'प्रतिपदा' हुआ। प्रतिपदा का महत्त्व सर्वाधिक है। यह सृष्टि-विधान की पहली तिथि होने से मांगलिक है। इस प्रतिपदा के पुण्य प्रभाव को देखते हुए अनेक धार्मिक कृत्यों का निर्देश किया गया है। संवत्सर शब्द का अर्थ बताते हुए कहा गया है कि जिसमें ऋतुएँ निवास करती हैं। इस दृष्टि से देखने पर यह प्रतिपदा वर्ष

की पहली ऋतु के प्रथम मास के प्रथम पक्ष की पहली तिथि है। यह प्रथम ऋतु वसन्त है, जिसे ऋतुराज कहा जाता है। चैत्र एवं वैशाख मास जिन्हें क्रमशः मधु तथा माधव मास कहा जाता है, ऋतु के महीने हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष के रूप में देश भर में भिन्न-भिन्न नामों से मनाया जाता है। दक्षिण के राज्यों कर्नाटक, तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश आदि में उगादि अथवा युगादि (युग का आदि) के रूप में वर्ष-प्रतिपदा प्रसिद्ध है। महाराष्ट्र और गोवा में इसका रूप गुड़ी पड़वा है, गुड़ी अर्थात पताका और पड़वा अर्थात प्रतिपदा कहलाता है। सिन्धी समाज में चेटीचण्ड (चैती चन्द्र) चैत्र के चन्द्रमा के प्रथम दर्शन के रूप में प्रचलित है।

वसंत की मधुमयी प्रकृति, शीत के कोप से मुक्त होता परिवेश और समृद्ध होती धरती के कारण चैत्र मास 'श्रीमान' मास कहलाता है। इसकी पहली प्रतिपदा नवजीवन की सम्भावना लेकर आती है। धर्मविग्रह श्रीराम के प्राकट्य का महीना बनकर यह चैत्रमास हमारी संस्कृति का आदरणीय मास समझा जाता है। प्रतिपदा से आरम्भ नवरात्र पर्व शक्ति सदाचार का अनुष्ठान-पर्व है, जिसकी नवमी पर मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म इसे रामनवमी की संज्ञा प्रदान करता है। वर्ष प्रतिपदा इन सभी दिव्यताओं का एकात्म उत्सव है। ●

● अमन दुबे

# स्वधर्म से स्वदेश तक : नयी पीढ़ी की वैचारिक यात्रा

समकालीन भारत में युवाओं की चेतना को समझने के लिये यह देखना आवश्यक है कि पिछले कुछ दशकों में उनकी वैचारिक दिशा में एक उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। जिस पीढ़ी को कभी केवल उपभोक्तावादी आधुनिकता और पश्चिमी सांस्कृतिक प्रभावों से प्रभावित माना जाता था, वही युवा आज स्वधर्म, स्वदेश और स्व संस्कृति के प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार करता दिखायी देता है। यह परिवर्तन केवल भावनात्मक आग्रह का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक व्यापक बौद्धिक जिज्ञासा और सभ्यतागत आत्मबोध का विकास भी निहित है।

औपनिवेशिक काल और उसके बाद के बौद्धिक वातावरण में भारतीय परम्पराओं को अक्सर इस प्रकार प्रस्तुत किया गया मानो वे आधुनिक ज्ञान विज्ञान के प्रतिकूल हों। परिणामस्वरूप पञ्चाङ्ग, ज्योतिषीय गणना, आयुर्वेद, योग या शास्त्रों जैसी ज्ञान परम्पराएँ लम्बे समय तक या तो अन्धविश्वास के रूप में देखी गयीं या उन्हें केवल धार्मिक आचार विधि तक सीमित कर दिया गया। किन्तु आज का युवा इन विषयों को पुनः परखने और समझने की दिशा में अग्रसर है। वह यह जानने का प्रयास कर रहा है कि भारतीय ज्ञान परम्पराओं के पीछे कौन सा तार्किक, दार्शनिक और वैज्ञानिक आधार विद्यमान है।

उदाहरण के लिये पञ्चाङ को ही लें। पहले इसे सामान्यतः केवल पर्व त्योहारों की तिथियाँ बताने वाला धार्मिक कैलेण्डर समझा जाता था, परन्तु वस्तुतः पञ्चाङ भारतीय खगोलशास्त्र और गणितीय परम्परा का एक परिष्कृत परिणाम है। तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण जैसे घटकों के माध्यम से समय की गणना करना केवल धार्मिक प्रयोजन नहीं बल्कि खगोलीय अवलोकन और गणना की एक दीर्घ परम्परा को दर्शाता है। आज कई युवा इन पहलुओं को समझने के लिये खगोलशास्त्र, गणित और इतिहास के सन्दर्भ में अध्ययन कर रहे हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि परम्परा और विज्ञान के बीच जो कृत्रिम विभाजन लम्बे समय तक बना रहा, वह धीरे धीरे टूट रहा है।

इसी प्रकार आयुर्वेद और योग के प्रति भी युवाओं में नयी रुचि उत्पन्न हुई है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ साथ आयुर्वेद की समग्र स्वास्थ्य दृष्टि जिसमें शरीर, मन और प्रकृति के सन्तुलन को महत्त्व दिया जाता है आज वैश्विक स्तर पर भी चर्चा का विषय बन रही है। योग, जो कभी केवल आध्यात्मिक साधना का माध्यम समझा जाता था। आज शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की एक वैज्ञानिक पद्धति के रूप में व्यापक स्वीकृति प्राप्त कर चुका है। इस परिवर्तन में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि वे इन परम्पराओं को अन्ध आस्था के रूप में नहीं बल्कि अनुभव और तर्क की कसौटी पर परखते हुए अपनाने का प्रयास कर रहे हैं।

स्वधर्म और स्व संस्कृति के प्रति यह जागरूकता केवल धार्मिक या आध्यात्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। इसका एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम भी है। आज का युवा यह समझने लगा है कि किसी भी समाज की सांस्कृतिक स्मृति और परम्परा उसकी पहचान का मूल आधार होती है। यदि कोई समाज अपनी ऐतिहासिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों से कट जाता है, तो उसकी वैचारिक दिशा भी अस्पष्ट हो जाती है। इसी कारण भारतीय युवाओं में इतिहास, पुरातत्व, दर्शन और पारम्परिक साहित्य के अध्ययन के प्रति भी रुचि बढ़ी है। संस्कृत, प्राचीन भारतीय दर्शन और लोक परम्पराओं के अध्ययन में नयी पीढ़ी की भागीदारी इसी प्रवृत्ति को दर्शाती है।

इसके साथ ही स्वदेश के प्रति चेतना का भी एक नया स्वरूप विकसित हुआ है। यह केवल राजनीतिक राष्ट्रवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आर्थिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक आत्मनिर्भरता की भावना भी जुड़ी हुई है। स्वदेशी उत्पादों के प्रति बढ़ती रुचि, भारतीय भाषाओं में ज्ञान सृजन का प्रयास और स्थानीय परंपराओं के संरक्षण की पहल ये सभी संकेत देते हैं कि युवा वर्ग अब अपने देश की विशिष्टता को समझते हुए उसे आधुनिक सन्दर्भों में पुनः परिभाषित करना चाहता है।

इस पूरी प्रक्रिया में सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व है विज्ञान और शास्त्र का समन्वय। लम्बे समय तक इन दोनों को परस्पर विरोधी मानने की प्रवृत्ति रही, किन्तु आज का युवा इस द्वैत को स्वीकार करने के बजाय समन्वय की दिशा में सोच रहा है। भारतीय शास्त्रों में निहित दार्शनिक दृष्टि और आधुनिक विज्ञान की विश्लेषणात्मक पद्धति दोनों को मिलाकर देखने का प्रयास एक नये प्रकार की बौद्धिकता को जन्म दे रहा है। यह दृष्टिकोण न तो अन्ध परम्परावाद है और न ही अन्ध पश्चिमीकरण, बल्कि यह एक सन्तुलित और विवेकपूर्ण दृष्टि है, जो परम्परा को आधुनिकता के साथ संवाद में रखती है।

आधुनिक भारतीय युवाओं में उत्पन्न यह जागरूकता केवल एक क्षणिक प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि यह भारत की सभ्यतागत चेतना के पुनर्जागरण का संकेत है। जब युवा अपनी परम्पराओं को समझते हुए उन्हें आधुनिक ज्ञान के साथ जोड़ने का प्रयास करते हैं, तब एक ऐसी सांस्कृतिक और बौद्धिक ऊर्जा का निर्माण होता है, जो समाज को नई दिशा प्रदान कर सकती है। स्वधर्म, स्वदेश और स्वसंस्कृति के प्रति यह सजगता, विज्ञान और शास्त्र के बीच स्थापित हो रहा समन्वय आने वाले समय में भारत की बौद्धिक और सांस्कृतिक शक्ति को और अधिक सुदृढ़ बनायेगा। ●

● डॉ. अनूप

# मुसलमानों की निष्ठा पर प्रश्न चिन्ह

## खामेनेई की मौत पर भारत के मुसलमानों का विधवा विलाप चिन्ताजनक

ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की अमेरिका और इजराइल द्वारा की गयी हत्या के विरोध में जिस प्रकार लाखों मुसलमान भारत में सड़कों पर उतरे हैं, यह गम्भीर चिन्ता का विषय है। इससे स्पष्ट होता है कि भारत के मुसलमानों को इस्लाम और राष्ट्र में किसी एक को चुनना होगा तो वे अपने मजहब को चुनेंगे।

**ऐसे में याद आते हैं बाबासाहेब भीमराव आम्बेडकर जिन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि मुसलमान कभी राष्ट्र भक्त नहीं हो सकते। उनकी निष्ठा देश के प्रति नहीं, सदैव अपने मजहब के प्रति रहती है इसीलिये लिये डॉ. आम्बेडकर ने भारत विभाजन के समय सभी मुसलमानों के पाकिस्तान भेजे जाने की बात कही थी।**

वे जानते थे कि यदि मुसलमान भारत में रह गये तो एक बार फिर देश विभाजन की स्थितियाँ पैदा होंगी। अब इसके स्पष्ट संकेत मिलने लगे हैं। खामेनेई की हत्या का भारत से कोई लेना-देना नहीं है। फिर भी यहाँ के मुसलमान स्यापा कर रहे हैं। कई मुसलमान तो खुलेआम कह रहे हैं कि यदि भारत और ईरान के बीच कभी युद्ध हुआ तो वे ईरान का साथ देंगे। मुस्लिम महिलाएँ कह रही हैं कि उनके गर्भ में पलने वाले बच्चे ईरान के लिये हैं। प्रश्न यह उठता है कि इस प्रकार की मानसिकता वाले लोगों को भारत में रहने का अधिकार क्यों होना चाहिये? यदि ईरान से इनको इतना ही प्रेम है तो यह लोग भारत छोड़ ईरान में रहने क्यों नहीं चले जाते?

### भारत के गद्दार

सड़कों पर प्रदर्शन, बाजार बन्द, नारेबाजी, आँसुओं का सैलाब, आँखों में गुस्सा, ट्रम्प और नेतन्याहू की कब्र खोदने को तैयार भीड़... ऐसे छाती पीट रहे हैं जैसे खामेनेई ने इनके घर के कितने चिराग रौशन कर दिये थे। पूरी दुनिया के मुसलमानों को पता है कि खामनेई को मरवाने में सऊदी अरब का भी हाथ है, लेकिन मजाल है कि ये वहाँ के शासक मोहम्मद बिन सलमान या सऊदी सरकार को गालियाँ दें दें या उसे बद्दुआ दें? उन्हें यह भी पता है कि इस्लामी देशों- कतर, बहरीन, कुवैत, इराक, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब और जॉर्डन पर ईरान ने हमले किये हैं। फिर भी, ये गद्दार लोग भारत में आग लगाने चाहते हैं। भारत की भूमि पर खामेनेई के पोस्टर लेकर झण्डों के साथ

ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की अमेरिका और इजराइल द्वारा की गयी हत्या के विरोध में लखनऊ में प्रदर्शन करते मुसलमान।

### भारत में आतंकवाद को बढ़ावा दिया

खामनेई भारत का मित्र नहीं था। उसने अभी हाल ही में ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान पाकिस्तान को ड्रोन दिये। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद फैलाने में उसका हाथ था। कश्मीर मुद्दे पर खामनेई ने हमेशा पाकिस्तान का साथ दिया। जब कश्मीर की पावन धरा पर पृथकतावाद के विषैले बीज बोये जा रहे थे, तब खामेनेई वहाँ इस्लामी क्रान्ति के नाम पर कट्टरपंथ का उद्बोधन देने आया था। खामेनेई ने सदैव भारत की अखण्डता को चुनौती देते हुए कश्मीर की तुलना गाजा और अफगानिस्तान से की और इसे एक उत्पीड़ित मुस्लिम राष्ट्र के रूप में प्रचारित किया। ऐसे व्यक्ति को कुछ लोग भारत का मित्र बताकर उसकी मौत पर आँसू बहा रहे हैं।

ईरान के पक्ष में प्रदर्शन का क्या औचित्य है? जो इजराइल भारत का सदैव मित्र रहा, उसने बुरे समय में सदैव हमारा साथ दिया, उसी इजराइल के विरुद्ध भारत के नागरिक विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं तो उनके लिये देशद्रोही शब्द ही उपयुक्त है। इन गद्दारों को पहलगाम नरसंहार पर रोना नहीं आया, कश्मीर नरसंहार पर रोना नहीं आया, सम्भल दंगों में जिन्दा जलाये गये निर्दोषों पर रोना नहीं आया, पुलवामा पर इनके आँसू नहीं छलके। और तो और एपीजे अब्दुल कलाम तो मुस्लिम थे, उनकी मृत्यु पर भी रोना नहीं आया लेकिन... विदेश में बैठे घोर कट्टरपंथी नेता जिसे युद्ध में मारा गया है उसके लिये ऐसा करुण क्रन्दन, ऐसा विधवा विलाप जैसे पता नहीं क्या हो गया।

## खामेनेई ने जो बोया वही काटा

खामेनेई मानता था कि यहूदियों को जीने का कोई अधिकार नहीं है। उसने पूरी शक्ति इजराइल को मिटाने पर लगायी। इजराइल के चारों तरफ उसने कई आतंकी संगठन खड़े कर दिये। लेबनान में हिजबुल्ला, गाजा में हमास, यमन में हुती जैसे खूँखार आतंकी संगठन उसी की देन हैं।

सीरिया में भी कई आतंकी संगठन उसने खड़े किये। वह सार्वजनिक रूप से कहता था कि मेरी एक मात्र इच्छा है कि इजराइल विश्व के मानचित्र से मिटना चाहिये और इस धरती पर एक भी यहूदी नहीं होना चाहिये। इजराइल को मिटाने के लिये ही वह परमाणु बम बना रहा था। इसी परमाणु बम को रोकने के लिये इजराइल और अमेरिका ने मिलकर ईरान पर हमला किया और खामेनेई का काम तमाम हो गया।

## महिलाओं का जीवन नर्क बनाया

खामेनेई ने अपने ही देश की महिलाओं का जीवन नर्क बना दिया बना दिया था। उसने मात्र नौ साल की आयु पूरी करते ही लड़कियों के विवाह को स्वीकृति दी थी। उसके लिये महिलाएँ सिर्फ भोग की वस्तु थीं। कोई महिला अगर हिजाब नहीं पहनती थी तो उसकी हत्या करवा दी जाती थी। ऐसी अनगिनत महिलाओं का उसने कत्ल कराया।

कठोर इस्लामी कानून लागू होने के चलते ईरान में महिलाओं को कोई अधिकार नहीं हैं। खामेनेई इतना कट्टर था कि किसी विदेशी महिला जैसे पत्रकार, राजनयिक आदि से भी तब तक नहीं मिलता था जब तक वह पूरी तरह सिर न ढके हो। खामेनेई ने ईरान में उसके शासन का विरोध करने वाले हजारों लोगों को मौत के घाट उतरवा दिया।

## सावधान रहना होगा

खामनेई की हत्या के बाद जिस प्रकार भारत के लाखों मुसलमान सड़कों पर उतरे हैं, वह हमारे लिये गम्भीर चेतावनी है। अभी तक कहा जाता था कि भारत में न जाने कितने पाकिस्तान बसते हैं। अब समझ में आ गया कि भारत में न जाने कितने ईरान, इराक, बांग्लादेश, सीरिया, सऊदी अरब जैसे 57 मुस्लिम देश बसते हैं। समय रहते इस रोग की चिकित्सा आवश्यक है, नहीं तो बहुत देर हो जायेगी। ●

# केजीएमयू में मजार के पास दोबारा अतिक्रमण

### ● भारी सुरक्षा में हटाया गया

**लखनऊ।** किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय (केजीएमयू) के नेत्र विभाग के पीछे स्थित हरमैनशाह दरगाह के पास होली की छुट्टी में एक बार फिर से मौलानाओं द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया। विश्वविद्यालय प्रशासन की शिकायत के बाद पुलिस और प्रशासन की टीम ने मौके पर पहुँचकर अवैध रूप से की गयी बैरिकेडिंग को हटवा दिया।

कार्रवाई के दौरान किसी प्रकार की अव्यवस्था न फैले, इसके लिये क्षेत्र में भारी पुलिस बल तैनात किया गया था। यह वही स्थान है, जहाँ पहले भी अतिक्रमण किया गया था और न्यायालय के आदेश के बाद उसे हटाया गया।

## पहले भी हटाया जा चुका अतिक्रमण

केजीएमयू के गेट नम्बर-1 के पास स्थित नेत्र विभाग के पीछे एक पुरानी मजार है। इस मजार के आसपास पहले भी मुस्लिमों ने अवैध निर्माण किया था। मामला सामने आने के बाद प्रशासन ने पुलिस की मदद से कार्रवाई की थी। उस समय यह मामला न्यायालय तक भी पहुँचा था। उच्च न्यायालय के आदेश के अनुपालन में

पुलिस प्रशासन ने वहाँ से अतिक्रमण हटाया था और पूरे स्थान को अतिक्रमण मुक्त कराया गया।

## पाँच को फिर कर दी थी बैरिकेडिंग

प्रॉक्टर कार्यालय के अनुसार 5 मार्च को कुछ कट्टरपंथियों ने दरगाह के चारों ओर फिर से बाँस और बल्लियों के सहारे बैरिकेडिंग कर दी। यह घेराबन्दी बिना किसी अनुमति के की गयी थी। जब विश्वविद्यालय प्रशासन को इसकी जानकारी मिली तो अधिकारियों ने मौके का निरीक्षण किया। निरीक्षण में पाया गया कि दरगाह के आसपास बनायी गयी यह घेराबन्दी पूरी तरह से अवैध है और इससे दोबारा अतिक्रमण की आशंका पैदा हो रही है। इसके बाद केजीएमयू प्रशासन ने तत्काल इस मामले को गम्भीरता से लेते हुए पुलिस को लिखित सूचना दी और कार्रवाई की माँग की।

## प्रॉक्टर कार्यालय ने लिखा पत्र

पूरे मामले में केजीएमयू के प्रॉक्टर कार्यालय की ओर से थाना चौक प्रभारी को पत्र भेजा गया। पत्र में कहा गया कि परिसर के भीतर अवैध रूप से बैरिकेडिंग की गयी है, जो न्यायालय के आदेश की मंशा के खिलाफ है। पत्र में यह भी उल्लेख किया गया कि यदि समय रहते इस तरह की गतिविधियों को नहीं रोका गया तो भविष्य में वहाँ स्थायी अतिक्रमण की स्थिति बन सकती है।

# युग प्रवर्तक स्वतंत्रता सेनानी डॉ. हेडगेवार

स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी योद्धा डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार जन्मजात स्वतंत्रता सेनानी थे। बाल्यकाल से लेकर जीवन के अन्तिम श्वास तक देश की स्वतंत्रता के लिये संघर्षरत रहे डॉक्टर हेडगेवार ने-

**"नहीं चाहिये पद, यश, गरिमा,**
**सभी चढ़े माँ के चरणों में।**
**भारत माता की जय केवल,**
**शब्द पड़े जग के कर्णों में।।"**

के सिद्धान्त पर अटल रहते हुए न तो अपनी आत्मकथा लिखी और न ही समाचार पत्रों की सुर्खियाँ बटोरी। इस अज्ञात स्वतंत्रता सेनानी का समस्त जीवन ही मातृ भूमि की स्वतंत्रता के लिये समर्पित था।

स्वतंत्रता समर महानायक महात्मा गांधी के नेतृत्व में आयोजित असहयोग आन्दोलन एवं दाण्डी यात्रा में सक्रिय भूमिका निभाने वाले डॉ. हेडगेवार ने दो बार एक-एक वर्ष के कठोर कारावास की यातनाएँ भोगी। वह एक आदर्श सत्याग्रही थे।

8 वर्ष की आयु में बाल केशव ने ब्रिटिश महारानी विक्टोरिया राज्यारोहण के अवसर पर विद्यालय के समारोह में विक्टोरिया की प्रशंसा में गीत गाने से मना कर दिया और विद्यालय में बाँटी गयी मिठायी को यह कहकर कूड़ेदान में फेंक दिया कि मैं हमारे देश को गुलाम बनाकर शासन करने वाली महारानी के राज्यरोहण के उपलक्ष्य में दी जाने वाली मिठायी को कूड़ा ही मानता हूँ इसलिये कूड़ेदान में डाल रहा हूँ।

12 वर्ष की आयु में एडवर्ड सप्तम के राज्यरोहण के उपलक्ष्य में आयोजित आतिशबाजी को देखने जाने के लिये यह कहकर मना कर दिया कि यह हमारे लिये प्रकाश का नहीं अंधकार का समय है। नागपुर के सीतावर्डी किले पर फहरा रहे ब्रिटिश झण्डे को देखकर मन में आक्रोश उठता था अतः मात्र 13 वर्ष की आयु में अपने बाल सखाओं को साथ लेकर अपने गुरु जी के खाली पड़े घर से सुरंग खोदकर किले से यूनियन जैक उतारकर उनके स्थान पर भगवा ध्वज फहराने की योजना बना डाली, इतनी बड़ी सुरंग खोद डालना कहाँ सम्भव था? गुरुजी ने घर आकर देखा तो केशव ने अपने मन का संकल्प बता दिया, गुरु जी ने केशव के साहस व संकल्प को देखकर बालकों को गले लगा लिया और समझाया कि यह सम्भव नहीं। बाल केशव की यह तीनों घटनाएँ इस बात की साक्षी है कि उसके तो रग-रग में स्वतंत्रता की ज्वाला धड़क रही थी। यह अद्भुत और अंनूठा उदाहरण है। ऐसे बाल स्वतंत्रता सेनानी को नमन। इतना ही नहीं नागपुर के नील सिटी हाई स्कूल में निरीक्षण के लिये आये एक अंग्रेज इंस्पेक्टर का केशव ने अपने सहपाठियों के साथ योजना बनाकर वन्दे मातरम् का उद्घोष से स्वागत किया। इस पर इंस्पेक्टर ने स्कूल के प्रधानाचार्य पर दबाव डलवाकर विद्यार्थियों से क्षमा याचना करवाई पर बाल केशव ने क्षमा माँगने से मना कर दिया और स्कूल से निष्कासित कर दिया गया था। निष्कासन की कीमत अदा करके भी देश के स्वाभिमान के साथ समझौता न करने का यह अनुपम उदाहरण है। कलकत्ता के मेडिकल कॉलेज में अध्ययन के समय क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में रहकर उनके बीच भूमिका सम्पर्क सूत्र का काम किया, धन की व्यवस्था की और 'कोकेन' नाम से प्रसिद्ध क्रान्तिकारी संस्था 'अनुशीलन समिति' के सक्रिय सदस्य हो गये। पढ़ायी पूरी कर कलकत्ता से लौटने पर घर-गृहस्थी न बसाकर अधिक सक्रियता से क्रान्तिकारी गतिविधियों में जुट गये।

1904 में मात्र 15 वर्ष की आयु में बम बनाना सीख लिया और 1908 में पुलिस चौकी पर बम फेंक दिया कुछ समय बाद मध्य प्रदेश व विदर्भ में क्रान्ति का री कार्यों की जिम्मेदारी सम्भाल क्रान्तिकारियों का एक नेटवर्क तैयार किया। 1921 में देश में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हो गया, इस आन्दोलन को गति देने और लोगों को जोड़ने के लिये अंग्रेजी शासन के विरोध में स्थान-स्थान पर उग्र एवं प्रभावी भाषण देने लगे। उनके भाषणों से घबराकर सरकार ने राजद्रोह का मुकदमा दायर किया। डॉक्टर जी ने मुकदमे की पैरवी स्वयं ही की और न्यायालय में अपने बचाव में जो भाषण दिया उसे सुनकर मजिस्ट्रेट ने कहा यह तो मूल भाषण से भी अधिक उग्र और खतरनाक है और एक वर्ष की सजा सुनाकर कारागार में बन्द कर दिया गया। कारागार में रहते हुए डॉक्टर जी ने उनके समान ही कारागार में बन्द अनेक स्वातंत्र्य सेनानियों व नेताओं से विचार-विमर्श किया और देश व समाज के तात्कालिक परिस्थिति और ऐतिहासिक घटनाक्रमों पर गहन चिन्तन किया। उनके मन में एक प्रश्न बार-बार उठता था कि आखिर इस विशाल देश में बार-बार विदेशी आक्रमणकारियों से पदाक्रान्त क्यों को होना पड़ता है और क्योंकर हमें परतंत्र होना पड़ता है? राजनैतिक स्वंतत्रता आवश्यक तो है पर क्या मात्र राजनैतिक स्वतंत्रता को पूर्ण एवं स्थायी स्वतंत्रता कहा जा सकता है? इस चिन्तन में से जो उत्तर मिला, वह यह था कि स्वतंत्रता एक बहुआयामी, बहुपक्षीय संकल्पना है। इसे भौगोलिक, राजनीतिक, संवैधानिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सामाजिक आदि अनेक पक्ष हैं।

महर्षि अरविन्द की तरह डॉक्टर जी को भी यह लगा था कि कुछ समय बाद राजनैतिक स्वतंत्रता तो मिल जायेगी पर मुख्य प्रश्न इसके सब पक्षों को संवारने और इस स्वतंत्रता को टिकाये रखने का है।

डॉक्टर हेडगेवार एक स्वाभिमानी, स्वावलम्बी, शक्तिशाली एवं समरस भारत का स्वप्न लेकर निःस्वार्थ बुद्धि एवं प्रमाणिकता से राष्ट्र व समाज समर्पित कार्यकर्ताओं के निर्माण में जुट गये थे। इसी भावना में से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जन्म हुआ। डॉक्टर जी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का यह मानना रहा है कि देश व समाज को चलाने वाला तंत्र अपने ही लोगों के हाथों में रहना आवश्यक है।

संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार कभी भी खण्डित भारत की आधी-अधूरी स्वाधीनता के पक्ष में नहीं रहे। वे तो सनातन भारत वर्ष (अखण्ड भारत) की सर्वांग स्वतंत्रता के लिये अन्तिम श्वास तक संघर्षरत रहे। संघ ऐसी ही सर्वतोन्मुखी स्वतंत्रता के लिये समर्पित एवं सतत कार्यरत है। ●

# किसी भी स्थान पर नमाज पढ़ने का धार्मिक अधिकार नहीं

मुम्बई। बाम्बे हाईकोर्ट ने शहर के छत्रपति शिवाजी महाराज अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा के पास नमाज पढ़ने की अनुमति देने से इनकार करते हुए कहा है कि सुरक्षा सर्वोपरि है और किसी भी व्यक्ति को किसी भी स्थान पर नमाज पढ़ने का धार्मिक अधिकार नहीं दिया जा सकता। अदालत ने स्पष्ट किया कि धार्मिक आस्था महत्वपूर्ण है, लेकिन संवेदनशील स्थानों पर सुरक्षा से समझौता नहीं किया जा सकता।

जस्टिस बी.पी. कोलाबावाला और जस्टिस फिरदौस पूनीवाला की पीठ टैक्सी, ऑटो रिक्शा और ओला-उबर चालकों की यूनियन की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। याचिका में कहा गया था कि एयरपोर्ट के पास एक अस्थायी शेड के नीचे चालक रमजान के दौरान नमाज पढ़ते थे, जिसे पिछले वर्ष अधिकारियों ने हटा दिया था। यूनियन ने उसी स्थान पर या आसपास किसी अन्य जगह पर नमाज की अनुमति देने की माँग की थी।

पिछली सुनवाई में अदालत ने पुलिस और एयरपोर्ट प्रशासन को वैकल्पिक स्थान तलाशने का निर्देश दिया था। अधिकारियों ने सात स्थानों का सर्वे करने के बाद रिपोर्ट सौंपी, लेकिन भीड़, सुरक्षा चिन्ताओं और एयरपोर्ट विकास योजनाओं के कारण कोई भी जगह उपयुक्त नहीं पायी गयी।

पीठ ने कहा कि कोई भी व्यक्ति दिन में पाँच बार नमाज पढ़ने से नहीं रोका जा रहा है, लेकिन वह यह दावा नहीं कर सकता कि वह अपनी पसन्द की किसी भी सार्वजनिक जगह पर नमाज पढ़ेगा।

## बदरी-केदार में गैर सनातनियों के प्रवेश पर रोक का प्रस्ताव

देहरादून। बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) की राजधानी में आयोजित बजट बैठक में आगामी यात्रा सत्र 2026-27 के लिए 121 करोड़ 7 लाख रुपये से अधिक का अनुमानित बजट सर्वसम्मति से पारित किया गया। बैठक में बदरीनाथ धाम और केदारनाथ धाम में गैर सनातनियों के प्रवेश पर रोक लगाने का प्रस्ताव भी पारित किया गया, जिस पर आगे शासन स्तर पर निर्णय लिया जाएगा।

बैठक में यात्रा व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने, श्रद्धालुओं की सुविधाओं में विस्तार करने और मंदिर परिसरों के विकास से जुड़े कई अहम प्रस्तावों पर भी चर्चा हुई। बजट में बदरीनाथ धाम के लिए 57 करोड़ रुपये और केदारनाथ धाम के लिए 63 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

बीकेटीसी अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने बताया कि आगामी चारधाम यात्रा को ध्यान में रखते हुए यह बजट तैयार किया गया है, ताकि यात्रा के दौरान व्यवस्थाएं सुचारु रूप से संचालित हो सकें। यात्रा कार्यक्रम के अनुसार बदरीनाथ धाम के कपाट 23 अप्रैल और केदारनाथ धाम के कपाट 22 अप्रैल को खुलेंगे, जबकि गंगोत्री धाम व यमुनोत्री धाम के कपाट अक्षय तृतीया के अवसर पर 19 अप्रैल को खोले जाएंगे। बैठक का संचालन मुख्य कार्याधिकारी विजय प्रसाद थपलियाल ने किया।

## मतान्तरण के आरोप में 100 अज्ञात पर केस

**रायबरेली।** जिले के बछरावाँ थाना क्षेत्र के मुबारकपुर गाँव में कथित रूप से मतान्तरण कराने की कोशिश के आरोप में पुलिस ने एक महिला समेत 100 अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। मामला उस समय सामने आया जब गाँव में बड़ी संख्या में महिलाएँ और बच्चे एक घर में एकत्रित पाये गये। शिकायतकर्ता ओमप्रकाश रावत ने पुलिस को बताया कि मुबारकपुर में रामरती के घर पर करीब 250 महिलाएँ और बच्चे मौजूद थे। आरोप है कि वहाँ ईसाई धर्म से जुड़ी प्रार्थना सभा आयोजित की जा रही थी और लोगों को रुपये व अन्य प्रलोभन देकर मतान्तरण के लिये प्रेरित किया जा रहा था। सूचना मिलने पर कुछ हिन्दू संगठन के लोग भी मौके पर पहुँच गये, जिसके बाद मामला पुलिस तक पहुँचा। पुलिस ने मौके की जानकारी जुटाने के बाद कार्रवाई करते हुए रामरती और 100 अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

# शताब्दी वर्ष में संघ का हो रहा संगठन विस्तार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की तीन दिवसीय बैठक हरियाणा के पट्टीकल्याणा (समालखा) में स्थित माधव सृष्टि परिसर में आयोजित की गयी। सह सरकार्यवाह सीआर मुकुन्द ने पत्रकारों को प्रतिनिधि सभा के शुभारम्भ के साथ विभिन्न विषयों एवं गतिविधियों की जानकारी दी। उनके साथ अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आम्बेकर भी उपस्थित रहे। सह सरकार्यवाह ने पत्रकारों को बताया कि देश भर में संघ के शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम चल रहे हैं जिनमें समाज की सज्जन शक्ति के सहयोग और सहभाग ने स्वयंसेवकों का उत्साहवर्धन किया है। संगठन विस्तार की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि संघ के कार्य का निरन्तर विस्तार हो रहा है और पिछले एक वर्ष में नये स्थानों पर नयी शाखाओं का संचालन प्रारम्भ हुआ है। पिछले वर्ष 51,740 स्थानों पर 83,129 शाखाएँ संचालित थीं जो अब बढ़कर 55,683 स्थानों पर 88,949 शाखाएँ हो गयी हैं। इस प्रकार एक वर्ष में 3943 नये स्थान जुड़े हैं और शाखाओं की संख्या 5820 की वृद्धि हुई है। संघ का प्रयास है कि आने वाले समय में गाँवों और कस्बों में अधिक से अधिक शाखाएँ प्रारम्भ हों और समाज जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सके।

## 10 करोड़ घरों तथा 3 लाख 90 हजार गाँवों तक सम्पर्क

संघ के शताब्दी वर्ष में दो प्रकार के कार्यक्रमों की योजना की गयी। इनमें एक संगठन विस्तार और दूसरा समाज की सज्जन शक्ति को सदभाव, समरसता के लिये संगठित करने का उद्देश्य रखा गया। इस दृष्टि से गृह सम्पर्क अभियान चल रहा है जिसके अन्तर्गत अभी तक देश के कुछ प्रान्तों में ही 10 करोड़ घरों तथा 3 लाख 90 हजार गाँवों तक सम्पर्क किया जा चुका है और अन्य प्रान्तों में यह अभियान जारी है। गृह सम्पर्क वर्ग और समुदाय के किसी पूर्वाग्रह के बिना घरों में जाकर परिवारों से मिलकर संघ के विषय में संवाद किया गया। सी आर मुकुंद ने बताया कि सिर्फ केरल राज्य का ही उदाहरण लें तो वहाँ 55 हजार से ज्यादा मुस्लिम घरों में तथा 54 हजार से ज्यादा

ईसाई परिवारों में सम्पर्क किया गया और इन सभी परिवारों ने स्वयंसेवकों का स्वागत किया। देश भर में अभी तक 36,000 से अधिक स्थानों पर हिन्दू सम्मेलनों का आयोजन हो चुका है जिनमें शहरी, ग्रामीण, दुर्गम जनजातीय क्षेत्र सहित सभी प्रकार के स्थान सम्मिलित हैं। इसमें अरुणाचल के एक दुर्गम क्षेत्र में आयोजित हिन्दू सम्मेलन का उदाहरण उल्लेखनीय है जहाँ लोगों ने कहा कि वे पहली बार इस प्रकार की आत्मीयता अनुभव कर रहे हैं। हिन्दू सम्मेलनों का आयोजन निरन्तर जारी है।

सह सरकार्यवाह के अनुसार समाज हित के लिये सज्जन शक्ति को संगठित करने की दृष्टि से प्रमुख नागरिक संगोष्ठियों के आयोजन भी किये गये हैं। दोनों प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के भीतर पंच परिवर्तन के व्यापक लक्ष्य के लिये वातावरण बन रहा है। इन परिवर्तनों में सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण चेतना, स्व एवं स्वदेशी के लिये गर्व, परिवार व्यवस्था के संरक्षण तथा नागरिक कर्तव्यों के लिये जागरूकता शामिल हैं। मुकुंद ने बताया कि संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन राव भागवत भी इन विषयों पर समाज के साथ सीधा संवाद स्थापित करने के लिये कार्यक्रमों में सहभाग कर रहे हैं।

## बांग्लादेश में हिन्दुओं पर चिन्ता

नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शान्ति और विकास के लिये सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों का भी संघ ने स्वागत किया है। मुकुन्द ने कहा कि इसी प्रकार मणिपुर में भी शान्ति और स्थायित्व की स्थिति बहाल होना संतोषजनक है और इसमें संघ के स्वयंसेवकों की भी भूमिका उल्लेखनीय है। वहीं पड़ोसी देश बांग्लादेश में हिन्दुओं की स्थिति को लेकर चिन्ता व्यक्त करते हुए उन्होंने आशा जतायी कि वहाँ हिन्दू समाज के साथ परिस्थितियाँ बेहतर होंगी। उन्होंने कहा कि संघ का उद्देश्य समाज की सज्जन शक्ति को एकत्रित कर राष्ट्र निर्माण के कार्य में आगे बढ़ना है। संघ का यह शताब्दी वर्ष कार्यक्रम अक्टूबर 2026 तक विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से जारी रहेगा। इस अवसर पर सीआर मुकुंद ने कहा कि संघ विश्व में शान्ति एवं सबकी कुशलता की कामना करता है।

## अब तक 37,048 हिन्दू सम्मेलनों का आयोजन

देश में अब तक 37,048 हिन्दू सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है जिनमें लगभग साढ़े तीन करोड़ लोगों ने सहभाग किया है। यह सम्मेलन शहरी, ग्रामीण, जनजातीय और दुर्गम क्षेत्रों में भी आयोजित हुए हैं। इनमें प्रमुखता से समाज में सामाजिक समरसता, पर्यावरण चेतना, कुटुम्ब प्रबोधन, स्व का बोध तथा नागरिक कर्तव्यों की पालना के लिये पंच परिवर्तन के लिये आह्वान किया गया। प्रेस वार्ता के दौरान अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेन्द्र ठाकुर जी एवं प्रदीप जोशी जी सहित अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। ●

# संघ विस्तार का अर्थ राष्ट्रीय विचार का विस्तार : दत्तात्रेय होसबाले

**समालखा (पानीपत)।** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तीन दिवसीय अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने पत्रकारों से संवाद में बताया कि पिछले वर्ष में संगठन कार्य का उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। संघ की शाखाएँ लगभग छह हजार की वृद्धि के साथ 88 हजार से अधिक हो गयी हैं तथा स्थान भी बढ़कर 55 हजार से अधिक हो गये हैं। इसके साथ ही साप्ताहिक मिलन और मण्डली की संख्या भी बढ़ी है। संगठन कार्य में विस्तार को इस प्रकार देखना भी आवश्यक है कि अण्डमान, अरुणाचल प्रदेश, लेह और दुर्गम जनजातीय क्षेत्रों में भी संघ की शाखाएं संचालित हो रही हैं। संघ शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों में भी इस सांगठनिक विस्तार को स्पष्टता से देखा जा सकता है।

उन्होंने कहा कि सांगठनिक विस्तार के साथ संघ समाज में गुणवत्ता संवर्धन के लिये भी निरन्तर कार्य कर रहा है। पंच परिवर्तन के माध्यम से समाज को सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित करना महत्वपूर्ण है। भारतीय अथवा हिन्दुत्व केवल एक विचार नहीं, बल्कि जीवन शैली है और इसके माध्यम से समाज में गुणवत्ता का विस्तार होना चाहिये। इसी उद्देश्य से समाज की सज्जन शक्ति को एकत्र करना और "पॉवर ऑफ गुड" का राष्ट्रहित में प्रवृत्त होना आवश्यक है। सरकार्यवाह जी ने कहा कि समाज में महापुरुषों के कार्यों को जाति, पंथ के भेद से ऊपर उठकर स्वीकार करना चाहिये और उनके माध्यम से समाज को सकारात्मक परिवर्तन के लिये आगे बढ़ना चाहिये। संघ के स्वयंसेवकों ने इसी दिशा में नवम गुरु श्री तेग बहादुर जी के बलिदान के 350वें वर्ष के अवसर पर देशभर में 2 हजार से अधिक कार्यक्रम किये, जिनमें 7 लाख से अधिक लोग सम्मिलित हुए। इसी प्रकार राष्ट्रगीत वन्देमातरम की 150 वर्षगाँठ भी उत्साहपूर्वक मनायी गयी। आगामी वर्ष में संत शिरोमणि रविदास जी महाराज के 650वें प्राकट्य वर्ष पर कार्यक्रमों की योजना बनी है।

## अण्डमान, अरुणाचल सहित पूरे देश में उत्साह

अण्डमान में प्रमुख 9 द्वीपों से 13 हजार से अधिक लोग सरसंघचालक जी की उपस्थिति में हुए हिन्दू सम्मेलन में सम्मिलित हुए। इसी प्रकार अरुणाचल प्रदेश जैसे कम जनसंख्या घनत्व वाले प्रदेश में भी 21 स्वधर्म सम्मेलनों में 37 हजार से अधिक लोगों ने सहभागिता की।

## जाति-पंथ के भेद से ऊपर उठकर हो महापुरुषों का सम्मान एवं अनुकरण

समाज में महापुरुषों के कार्यों को जाति, पंथ के भेद से ऊपर उठकर स्वीकार करना चाहिये और उनके माध्यम से समाज को सकारात्मक परिवर्तन के लिये आगे बढ़ना चाहिये। संघ के स्वयंसेवकों ने इसी दिशा में नवम गुरु श्री तेगबहादुर जी के बलिदान के 350वें वर्ष पर देशभर में 2 हजार से अधिक कार्यक्रम किये, जिनमें 7 लाख से अधिक लोग सम्मिलित हुए।

संघ के आगामी वर्ष के नियमित प्रशिक्षण वर्गों की जानकारी दी और बताया कि 11 क्षेत्र के वर्ग तथा एक नागपुर के वर्ग को मिलाकर कुल 96 प्रशिक्षण वर्ग संचालित किये जायेंगे। प्रतिनिधि सभा में गौ-सेवा और ग्रामविकास की भी योजनाओं पर विचार किया गया है। नागरिकों को प्रेरित किया जायेगा कि वे घर की छत पर सब्जी उगायें, उसमें देसी गोबर और गौमूत्र की खाद का उपयोग करें। जिससे गौसंवर्धन में सभी सहयोग कर सकते हैं। इसी तरह हरित घर बनाने का भी संकल्प नागरिक ले सकते हैं, जिससे घर में पॉलीथीन का न्यूनतम उपयोग, जल संरक्षण आदि प्रयास किये जा सकते हैं। संघ की संगठनात्मक संरचना में परिवर्तन सम्बन्धित प्रश्न पर उन्होंने कहा कि संरचना में विकेन्द्रीकरण पर विचार हुआ हैए जिसमें प्रान्त के स्थान पर छोटी इकाई संभाग बनाने का प्रस्ताव है। जिसके लागू होने पर 46 प्रान्तों के स्थान पर 80 से अधिक संभाग होंगे।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में सरकार्यवाह जी ने कहा कि समाज में जातिगत आधार पर विभेद को समाप्त करने के लिये मीडिया को भी आगे आना चाहिये और किसी भी चुनाव में मतदाताओं की संख्या का जाति आधारित आकलन बंद करना चाहिए। वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय परिस्थितियों में देश की सरकार द्वारा राष्ट्रहित में किये जा रहे कूटनीतिक प्रयासों की सराहना की और कहा कि संघ विश्व में न्ति और विकास का पक्षधर है। एक अन्य प्रश्न के उत्तर में कहा कि डॉ. हेडगेवार ने किसी समुदाय और पंथ-पूजा पद्धति के विरोध के लिये संघ की स्थापना नहीं की। संघ के दूसरे सरसंघचालक श्री गुरुजी ने भी कहा था कि हम सबके पूर्वज एक हैं और पूजा-पाठ की पद्धति की भिन्नता से कोई अन्तर नहीं आता, इसमें डीएनए शब्द नहीं था किन्तु अभिप्राय यही था। तीसरे सरसंघचालक बालासाहब देवरस ने भी कहा था। भारत को अपनी मातृभूमि व अपना राष्ट्र मानने वाले और भारतीयता को जीने वाले सभी हिन्दू हैं। संघ में सबका स्वागत है, जो भी समाज के लिये अच्छा कार्य कर रहा है, हम उसको संघ का स्वयंसेवक ही मानते हैं। ●

● डॉ. अजय कुमार

# चिकित्सा क्षेत्र में क्रान्ति ला सकती है न्यूरोथेरेपी

न्यूरोथेरेपी वैकल्पिक चिकित्सा प्रणाली है, जो शरीर की प्राकृतिक सन्तुलन प्रणाली को पुनः स्थापित करने में सहायता करती है। यह पद्धति शरीर के विभिन्न अंगों पर दबाव, मालिश या उत्तेजना देकर रक्त संचार और तंत्रिका तंत्र को बेहतर बनाती है। यह पद्धति शरीर के अन्दरूनी दोषों को ठीक करने में मदद करती है, जिससे रोगों का उपचार सम्भव होता है। यह पूर्णतः भारतीय उपचार पद्धति है, जिसकी खोज मुम्बई के डॉक्टर लाजपत राय मेहरा ने की। इसमें किसी भी प्रकार की दवायी नहीं दी जाती। इस पद्धति का सिद्धान्त है कि शरीर के अन्दर ही उसे ठीक रखने के लिये हर प्रकार के रसायन बनाने की क्षमता है। किसी कारणवश जैसे आहार विहार पर नियंत्रण न हो, गलत ढंग से उठना बैठना, दूषित वातावरण, मानसिक तनाव, अपने सामर्थ्य से अधिक मानसिक या शारीरिक कार्य, पोषण की कमी, भय, क्रोध से शरीर के अंगों एवं ग्रंथियों के कार्य पर असर होता है। इससे उनका कार्य धीमा हो जाता है या बिगड़ जाता है। इस कारण उन ग्रंथियों में बनने वाले रसायन या हार्मोन में कमी आ जाती है। जिससे शरीर का अम्ल या क्षार इत्यादि का सन्तुलन बिगड़ जाता है और कुछ चीजों की कमी से बीमारी आ जाती है।

## दवाई का प्रयोग नहीं

न्यूरोथेरेपी में हम शरीर के विभिन्न अंगों पर खास प्रकार के दबाव या अन्य तरीकों द्वारा शरीर के रक्त, लसीका एवं तंत्रिका के प्रवाह को नियंत्रित करते हैं एवं आवश्यकता के अनुसार विभिन्न ग्रंथियों को उत्साहित कर उनके कार्य को सुचारू रूप से चलते हैं। न्यूरोथेरेपी में किसी भी प्रकार की दवाई या उपकरण का प्रयोग नहीं होता। उपचार देते समय थैरेपिस्ट रोगी के दोनों तरफ कुर्सियों का सहारा लेकर अपने पैरों से मरीज के हाथ, पैर, जाँघ इत्यादि पर खास ढंग से दबाव देते हैं जिससे मरीज को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता। यह उपचार एक दिन के बच्चे से लेकर 100 साल की उम्र का हर व्यक्ति करवा सकता है। बिल्कुल छोटे बच्चों, बुजुर्ग तथा कमजोर व्यक्तियों को हाथ से एवं बड़ी उम्र के व्यक्तियों को पैरों से उपचार दिया जाता है। न्यूरोथेरेपी द्वारा शरीर की रोग प्रतिरोध शक्ति को बढ़ा दिया जाता है। जिससे हानिकारक विषाणु या जीवाणु दोनों को खत्म करने की शक्ति शरीर में ही निर्माण होती है और इस प्रकार बिना किसी दवा या साइड इफेक्ट के शरीर को स्वस्थ किया जा सकता है।

## न्यूरोथेरेपी कैसे काम करती है ?

आज के समय में, जब स्वास्थ्य समस्याएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं, एक प्राकृतिक और प्रभावी चिकित्सा पद्धति न्यूरोथेरेपी लोगों के जीवन को अच्छा बना रही है। यह एक ऐसी पद्धति है, जो बिना किसी दवा के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाने पर ध्यान केन्द्रित करती है। न्यूरोथेरेपी का आधार यह मान्यता है कि शरीर अपने आप को स्वाभाविक रूप से ठीक करने की क्षमता रखता है। यह निम्नलिखित सिद्धान्तों पर कार्य करती है-

**नर्व्स पर दबाव डालना-**

शरीर की नसों और माँसपेशियों पर सही जगह पर दबाव डालकर नर्वस सिस्टम को सक्रिय किया जाता है।

**रक्त संचार में सुधार-**

यह प्रक्रिया शरीर के विभिन्न अंगों तक खून और ऑक्सीजन के प्रवाह को बेहतर बनाती है।

**शारीरिक सन्तुलन बहाल करना-**

यह शरीर में हार्मोनल संतुलन को पुनः स्थापित करने में मदद करता है।

## किन रोगों में लाभकारी है ?

न्यूरोथेरेपी अधिकांश शारीरिक और मानसिक रोगों में उपयोगी है। जैसे जोड़ों के दर्द जैसे कमर, गर्दन और घुटनों की पीड़ा, गठिया, सायटिका, स्लिप डिस्क, कंधा जाम आदि, पेट सम्बन्धी सभी रोग जैसे अपच, कब्ज आदि, यकृत, गुर्दा, हृदय और पित्ताशय सम्बन्धी रोग, नींद न आना, तनाव व चिन्ता, माइग्रेन आदि, मधुमेह और उच्च व निम्न रक्तचाप, संतानहीनता, मासिक धर्म सम्बन्धी विकार, एलर्जी, सर्दी-जुकाम, सांस सम्बन्धी रोग जैसे अस्थमा आदि, मंद बुद्धि, मानिसक विकार, सेरिब्रल पाल्सी, त्वचा रोग आदि।

## कम खर्चीली चिकित्सा पद्धति

न्यूरोथेरेपी पद्धति एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जिसमें न कोई दवा, न उपकरण का प्रयोग होता है इसलिये इस पद्धति के माध्यम से विभिन्न महँगी दवाइयाँ और उपकरणों के चिकित्सा खर्च से बचा जा सकता है। भारत का प्रति व्यक्ति वार्षिक स्वास्थ्य बजट न्यूनतम स्तर पर आ सकता है।

## न्यूरोथेरेपी के लाभ

यह प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति है। इसमें किसी भी प्रकार की दवाइयों का उपयोग नहीं होता। यह पूरी तरह से सुरक्षित और दुष्प्रभाव मुक्त है। यह रोग की जड़ तक पहुँचकर उपचार करती है, जिससे लम्बे समय तक लाभ मिलता है। न्यूरोथेरेपी का उपयोग बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक हर किसी के लिये उपयोगी है।

## रोजगार देने में सहायक

न्यूरोथेरेपी सरल चिकित्सा पद्धति है। सीमित अवधि का प्रशिक्षण प्राप्त कर व्यक्ति चिकित्सा करने में सक्षम हो जाता है। इस प्रकार यह पद्धति एक ओर स्वस्थ भारत का सपना साकार करने में सहायक है। वहीं बेरोजगारी को दूर करने में सक्षम है। ●

**सम्पर्क : 9161632599**

# धर्म का स्वरूप : अग्नि–वशिष्ठ संवाद के अंश...

भारतीय चिन्तन परम्परा में धर्म केवल आचार-विचार का नियम नहीं, बल्कि जीवन और समाज को सन्तुलित रखने वाली मूल व्यवस्था है। वेद, उपनिषद और पुराणों में धर्म के स्वरूप पर अनेक संवाद मिलते हैं, जिनमें ऋषियों और देवताओं के माध्यम से जीवन के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल भाषा में समझाया गया है। ऐसे ही महत्त्वपूर्ण संवादों में एक है अग्नि और वशिष्ठ का संवाद, जिसमें धर्म के स्वरूप, उसके आधार और मनुष्य के कर्तव्यों की विवेचना मिलती है।

अग्नि बोले- "हे महर्षि वशिष्ठ! आप ब्रह्मज्ञान के ज्ञाता और धर्ममार्ग के प्रकाशक हैं। कृपा कर बताइये कि धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है? मनुष्य किस आचरण से धर्ममय जीवन प्राप्त करता है?"

वशिष्ठ ने शान्त स्वर में कहा- "हे अग्निदेव! धर्म वह शक्ति है जो समस्त जगत को धारण करती है। वही समाज में मर्यादा स्थापित करता है और मनुष्य को सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। धर्म केवल यज्ञ या कर्मकाण्ड नहीं है, बल्कि सत्य, दया, क्षमा और संयम से युक्त आचरण ही उसका वास्तविक रूप है।"

अग्नि ने पुनः प्रश्न किया- "यदि धर्म इतना व्यापक है, तो मनुष्य इसे अपने जीवन में कैसे पहचान सकता है?"

वशिष्ठ बोले- "जहाँ सत्य है, वहीं धर्म है। जहाँ करुणा है, वहीं धर्म है। जो आचरण स्वयं को और दूसरों को कल्याण की ओर ले जाये, वही धर्म है। मनुष्य जब अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर लोकहित का विचार करता है, तब वह धर्म के मार्ग पर चलता है।"

अग्नि ने कहा- "किन्तु संसार में अनेक मत और आचरण हैं। तब मनुष्य कैसे निश्चय करे कि कौन सा मार्ग धर्म का है?"

वशिष्ठ ने उत्तर दिया- "धर्म का निर्णय तीन आधारों से होता है- शास्त्र, सदाचार और अन्तःकरण की पवित्रता। शास्त्र मार्ग दिखाते हैं, श्रेष्ठ जनों का आचरण प्रेरणा देता है और निर्मल अन्तःकरण सही निर्णय करने की शक्ति देता है। इन तीनों का समन्वय ही धर्म का प्रकाश है।"

अग्नि ने पुनः जिज्ञासा प्रकट की- "क्या केवल ज्ञान से धर्म प्राप्त हो सकता है?"

वशिष्ठ ने कहा- "ज्ञान मार्ग दिखाता है, परन्तु आचरण उसे पूर्ण करता है। जो सत्य बोलता है, दया रखता है, इन्द्रियों को संयमित करता है और न्यायपूर्ण व्यवहार करता है, वही सच्चा धर्मात्मा है। धर्म का फल केवल इस लोक में नहीं, बल्कि परलोक में भी सुख और शान्ति के रूप में प्राप्त होता है।"

अग्नि ने अन्त में कहा- "हे ऋषिवर! आपके वचनों से धर्म का स्वरूप स्पष्ट हो गया। अब ज्ञात हुआ कि धर्म केवल पूजा नहीं, बल्कि जीवन का समग्र सदाचार है।"

वशिष्ठ ने कहा- "निश्चय ही। जब मनुष्य अपने कर्तव्य को ईमानदारी से निभाता है और सभी प्राणियों में ईश्वर का अंश देखता है, तब वही धर्म की सर्वोच्च अवस्था है।"

अन्ततः अग्नि और वशिष्ठ संवाद स्पष्ट से होता कि धर्म का आधार केवल कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि सत्य, करुणा, संयम और लोककल्याण है। धर्म मनुष्य के भीतर नैतिक चेतना को जागृत करता है और समाज में सन्तुलन स्थापित करता है। आज के समय में भी यह शिक्षा उतनी ही प्रासंगिक है कि धर्म का वास्तविक रूप आचरण की पवित्रता और मानवता की रक्षा में निहित है।।

**संवाद : सन्दर्भ.. अग्नि पुराण**

# कर्नाटक में 16 वर्ष से कम के बच्चों के लिये सोशल मीडिया प्रतिबन्धित

## ● आन्ध्र प्रदेश में भी लगेगा प्रतिबन्ध

**बेंगलुरू।** कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने वर्ष 2026-27 का बजट प्रस्तुत करते हुए 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिये इन्टरनेट मीडिया के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाने की घोषणा की है। सरकार के इस कदम का उद्देश्य बच्चों को इंटरनेट मीडिया के प्रतिकूल प्रभाव से बचाना है।

कर्नाटक के अधिकांश अभिभावकों ने सरकार की इस पहल का स्वागत किया है लेकिन वे इसे लागू करने की व्यावहारिकता को लेकर चिन्तित भी हैं। सदन में घोषणा करने के बाद मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि 16 वर्ष से कम आयु के बच्चे मोबाइल फोन रख सकेंगे लेकिन वे इन्टरनेट मीडिया का इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे।

वहीं आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चन्द्रबाबू

नायडू ने भी बताया हे कि जल्द ही राज्य में 13 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिये इंटरनेट मीडिया पर प्रतिबन्ध लगा दिया जायेगा। मुख्यमंत्री ने राज्य विधानसभा में चर्चा के दौरान कहा कि क्या इसे 16 वर्ष की आयु तक बढ़ाया जा सकता है।आंध्र प्रदेश में भी अब 16 वर्ष की आयु तक के बच्चे जोखिम भरे डिजिटल प्लेटफार्म पर खाते नहीं बना सकेंगे।

इसके साथ ही अब उत्तर प्रदेश में भी बच्चों के लिए इंटरनेट पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग जोर पकड़ रही है। लखनऊ के अभिभावकों का कहना है कि सोशल मीडिया का सही उपयोग समझने की सही आयु 16 वर्ष के बाद ही आती है। इससे पहले बच्चों को इस दुनिया से दूर रखना ही बेहतर है। तकनीक का उपयोग जरूरी है लेकिन उसकी एक सीमा भी होनी चाहिये। प्रदेश सरकार यदि इस दिशा में ठोस नीति बनाती है तो यह आने वाली पीढ़ी के लिये हित में होगा। छोटे बच्चों के लिये मोबाइल से दूर रहना ही अच्छा है क्योंकि इससे पढ़ायी तो प्रभावित होती ही है बच्चों का सामाजिक व्यवहार भी बदल रहा है।

# दिन के आठ प्रहर और उनके राग

हिन्दू धर्म में समय की धारणा बहुत ही वृहत तौर पर रही है। जो वर्तमान में सेकेण्ड, मिनट, घण्टे, दिन-रात, माह, वर्ष, दशक और शताब्दी तक सीमित हो गयी है लेकिन हिन्दू धर्म में एक अणु, तृसरेणु, त्रुटि, वेध, लावा, निमेष, क्षण, काष्ठा, लघु, दण्ड, मुहूर्त, प्रहर या याम, दिवस, पक्ष, माह, ऋतु, अयन, वर्ष (वर्ष के पाँच भेद- संवत्सर, परिवत्सर, इद्वत्सर, अनुवत्सर, युगवत्सर), दिव्य वर्ष, युग, महायुग, मन्वन्तर, कल्प, अंत में दो कल्प मिलाकर ब्रह्मा का एक दिन और रात, तक की वृहत्तर समय पद्धति निर्धारित है।

## आठ प्रहर

हिन्दू धर्मानुसार दिन-रात मिलाकर 24 घण्टे में आठ प्रहर होते हैं। औसतन एक प्रहर तीन घण्टे या साढ़े सात घटी का होता है जिसमें दो मुहूर्त होते हैं। एक प्रहर एक घटी 24 मिनट की होती है। दिन के चार और रात के चार मिलाकर कुल आठ प्रहर।

- दिन के चार प्रहर-

पूर्वान्ह, मध्यान्ह, अपरान्ह, सायंकाल

- रात के चार प्रहर-

प्रदोष, निशिथ, त्रियामा, उषा

एक प्रहर तीन घण्टे का होता है।

सूर्योदय के समय दिन का पहला प्रहर प्रारम्भ होता है जिसे **पूर्वान्ह** कहा जाता है। दिन का दूसरा प्रहर जब सूरज सिर पर आ जाता है तब तक रहता है जिसे **मध्याह्न** कहते हैं। इसके बाद **अपरान्ह** (दोपहर बाद) का समय शुरू होता है, जो लगभग 4 बजे तक चलता है। 4 बजे बाद दिन अस्त तक **सायंकाल** चलता है। फिर क्रमशः प्रदोष, त्रियाम एवं उषा काल। सायंकाल के बाद ही प्रार्थना करना चाहिये।

## अष्टयाम

वैष्णव मन्दिरों में आठ प्रहर की सेवा-पूजा का विधान 'अष्टयाम' कहा जाता है।

वल्लभ सम्प्रदाय में मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, संध्या-आरती तथा शयन के नाम से ये कीर्तन-सेवाएँ हैं।

इसी के आधार पर भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग के गाने का समय निश्चित है। प्रत्येक राग प्रहर अनुसार निर्मित है।

**प्रहर 1** (सुबह 6 बजे से 9 बजे तक) भैरव, बंगाल भैरव, रामकली, विभास, जोगई, तोड़ी, जयदेव, सुबह कीर्तन, प्रभात भैरव, गुंकाली और कलिंगरा।

**प्रहर 2** (सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक) देव गांधार, भैरवी, मिश्र भैरवी, असावरी, जौनपुरी, दुर्गा, गांधारी, मिश्र बिलावल, बिलावल, बृंदावनी सारंग, सामंत सारंग, कुरुभ, देवनागिरिं।

**प्रहर 3** (दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक) गोर सारंग, भीमपलासी, पीलू, मुल्तानी, धानी, त्रिवेणी, पलासी, हंसकंकिनी।

**प्रहर 4** (दोपहर 3 से शाम 6 बजे) बंगाल का पारंपरिक कीर्तन, धनसारी, मनोहर, रागश्री, पुरावी, मालश्री, मालवी, श्रीटंक और हंस नारायणी।

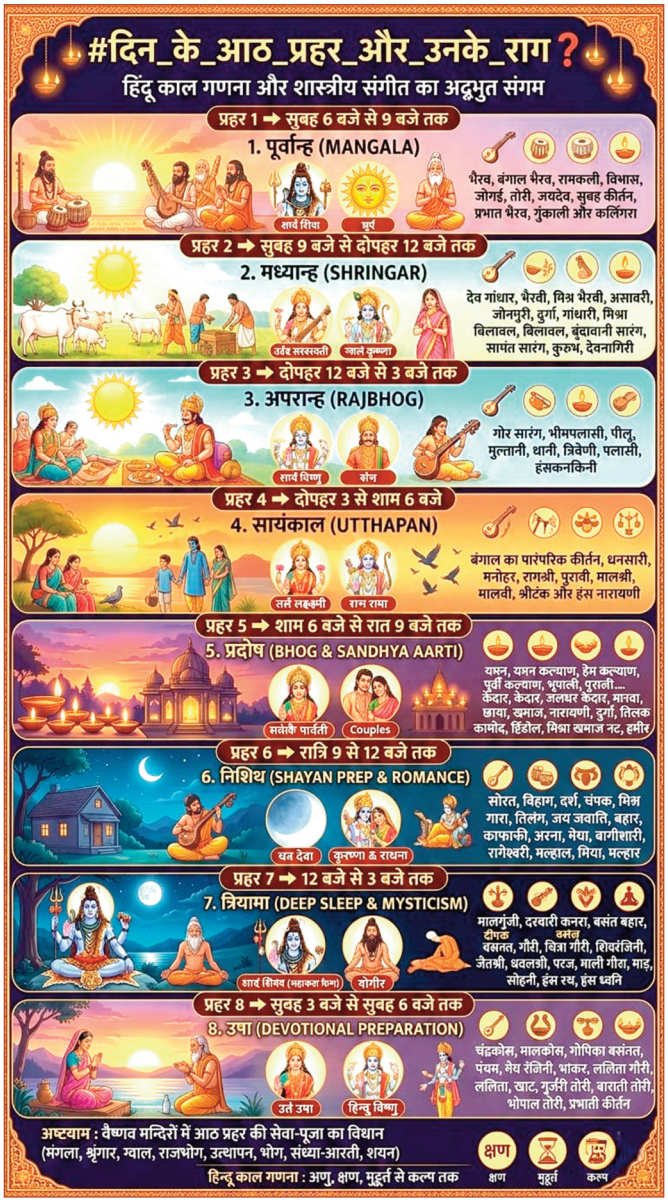


**प्रहर 5** (शाम 6 बजे से रात 9 बजे तक) यमन, यमन कल्याण, हेम कल्याण, पूर्वी कल्याण, भूपाली, पुरिया, केदार, जलधर केदार, मारवा, छाया, खमाज, नारायणी, दुर्गा, तिलक कामोद, हिण्डोल, मिश्रा खमाज नट, हमीर।

**प्रहर 6** (रात्रि 9 से 12 बजे तक) सोरत, बिहाग, दर्श, चंपक, मिश्र गारा, तिलंग, जय जवान्ति, बहार, काफी, अरना, मेघा, बागीशारी, रागेश्वरी, मल्हाल, मिया, मल्हार।

**प्रहर 7** (12 बजे से 3 बजे तक) मालगुंजी, दरबारी कनरा, बसंत बहार, दीपक, बसंत, गौरी, चित्रा गौरी, शिवरंजिनी, जैतश्री, धवलश्री, परज, माली गौरा, माड़, सोहनी, हंस रथ, हंस ध्वनि।

**प्रहर 8** (सुबह 3 बजे से सुबह 6 बजे तक) चंद्रकोस, मालकोस, गोपिका बसंत, पंचम, मेघ रंजिनी, भांकर, ललिता गौरी, ललिता, खाट, गुर्जरी तोरी, बाराती तोरी, भोपाल तोरी, प्रभाती कीर्तन। ●

# ब्रीमैटो एवं पोमैटो : सम्भावनाओं की आधुनिक खेती

आज के परिपेक्ष में सीमित भूमि संसाधनों में उपभोक्ता की अपेक्षा के अनुसार कम रसायनों का प्रयोग करते हुए गुणवत्ता युक्त ऊपज पाना एक प्रमुख चुनौती है। तीव्र शहरीकरण एवं घटती कृषि योग्य भूमि के दृष्टिगत ऐसी तकनीकों की आवश्यकता बढ़ गयी है, जो कम स्थान में अधिक उत्पादन दे सकें। ग्राफ्टिंग तकनीक द्वारा भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद के अन्तर्गत भारतीय सब्जी अनुसन्धान संस्थान द्वारा इसी दिशा में दो महत्वपूर्ण तकनीकें विकसित की गयी है। इस तकनीक द्वारा एक ही पौधे पर दो अलग अलग सब्जियों का उत्पादन करके एक साथ कई चुनौतियों से निपटा जा सकता है।

## पोमैटो (Pomato)

पोमैटो अर्थात आलू+टमाटर, एक अभिनव ग्राफ्टिंग तकनीक है जिसमें आलू को मूलवृन्त (Rootstock) तथा टमाटर को सायन (Scion) के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस विधि से एक ही पौधे से ऊपर टमाटर तथा मिट्टी के नीचे आलू का उत्पादन प्राप्त होता है। इसके लिये 15 से 20 दिन का आलू का पौधा एवं 25 दिन के टमाटर के पौधों का प्रयोग किया जाता है। क्लेफ्ट एवं साइड नाम की दो ग्राफ्टिंग तकनीकों, जिसमें क्रमशः अँग्रेजी के V (वी) आकार का चीरा, एवं 45 अंश के कोण द्वारा मूलवृन्त एवं सायन को जोड़ा जाता है। ग्राफ्टिंग के उपरांत पौधों को 22-28 डिग्री तापमान एवं 85 प्रतिशत से अधिक आर्द्रता में अगले 5 दिनों के लिये रखा जाता है। तैयार पौधों को 60X50 सेमी की दूरी पर ड्रिप सिंचायी के साथ उभारदार

नालियों पर लगाये जाने की अनुशंसा की जाती है। इसके लगाने हेतु उपयुक्त समय 15-20 अक्टूबर है। मृदा को पोषण हेतु समृद्ध बनाने के लिए 20 टन प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर की खाद एवं 150:60:80 के अनुपात में एन पी के का प्रयोग किया जाता है। इस विधि द्वारा प्रति पौध 2.5-3.5 किग्रा टमाटर एवं 0.8-1.0 किग्रा आलू उत्पादित किया जा सकता है, एवं लागत : लाभ का अनुपात लगभग 2.93 प्राप्त किया जा सकता है।

## ब्रिमैटो (Brimato)

ब्रिमैटो अर्थात बैगन+टमाटर, में बैगन को मूलवृन्त तथा टमाटर को सायन के रूप में उपयोग किया जाता है। इस विधि द्वारा दोहरी ग्राफ्टिंग करके बैगन एवं टमाटर दोनों की उपज प्राप्त की जाती है। तैयार पौधों को 90X60 सेमी की दूरी पर ड्रिप सिंचायी के साथ उभारदार नालियों पर लगाये जा सकते हैं एवं बाँस व रस्सियों के सहारे खड़ा करने से बीमारियों से मुक्त, गुणवत्तायुक्त अधिक फल प्राप्त किये जा सकते हैं। मृदा को पोषण हेतु समृद्ध बनाने के लिये 20 टन की दर से गोबर की खाद एवं 150:80:100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के अनुपात में एन पी के का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार प्रति पौध 7-10 बैगन एवं 35-40 टमाटर प्राप्त किए जा सकते हैं, यदि हम उपज की बात करें तो प्रति पौध 2.75 किग्रा बैगन एवं 3.25 किग्रा टमाटर प्राप्त किया जा सकता है। इस तकनीक से प्रति हेक्टर लगभग 47% आय वृद्धि होती है।

इस तकनीक में प्रयोग किये जाने वाला बैगन मूलवृन्त (आईसी-111056) अधिक जलभराव, सूखा तथा जीवाणु जनित उकठा रोग के प्रति अवरोधी है। सब्जी उत्पादक इन ग्राफ्टिंग तकनीकों का संस्थान में प्रशिक्षण लेकर घरेलू स्तर पर ग्राफ्टिंग पौध तैयार कर रहे हैं। इस तकनीक का प्रशिक्षण 125 से अधिक किसानों को दिया गया है, जिसमें कुल 11 किसान इसे एक कृषि उद्यम के रूप में अपना रहे हैं।

मुख्यतः इस प्रकार की ग्राफ्टिंग द्वारा सफेद मक्खी, झुलसा, फल-ताना छेदक एवं पर्ण कुंचन विषाणु के प्रकोप को कम किया जा सकता है। अच्छे फसल प्रबन्धन हेतु स्वस्थ बीज, फेरोमोन ट्रेप एवं अनुशंसित कीटनाशकों का उपयोग किया जा सकता है। यह विधियाँ पर्यावरण अनुकूल है जिसमें भूमि, पानी और उर्वरकों की बचत होती है एवं ग्राफ्टिंग से कुछ मिट्टी जनित रोगों से सुरक्षा मिलती है जो छोटे किसानों और घरेलू खेती के लिये वरदान। ●

**लेखक : भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी में कार्यरत हैं।**

# बन्दर और लकड़ी का खूँटा

एक समय शहर से कुछ ही दूरी पर एक मन्दिर का निर्माण किया जा रहा था। मन्दिर में लकड़ी का काम बहुत था इसलिये लकड़ी चीरने वाले बहुत से मजदूर काम पर लगे हुए थे। यहाँ-वहाँ लकड़ी के लट्ठे पड़े हुए थे और लट्ठे व शहतीर चीरने का काम चल रहा था। सारे मजदूरों को दोपहर का भोजन करने के लिये शहर जाना पड़ता था, इसलिये दोपहर के समय एक घण्टे तक वहाँ कोई नहीं होता था। एक दिन खाने का समय हुआ तो सारे मजदूर काम छोड़कर चल दिये। एक लट्ठा आधा चिरा रह गया था। आधे चिरे लट्ठे में मजदूर लकड़ी का कीला फंसाकर चले गये। ऐसा करने से दोबारा आरी घुसाने में आसानी रहती है।

तभी वहाँ बन्दरों का एक दल उछलता-कूदता आया। उनमें एक शरारती बन्दर भी था, जो बिना मतलब चीजों से छेड़छाड़ करता रहता था। पंगे लेना उसकी आदत थी। बन्दरों के सरदार ने सबको वहाँ पड़ी चीजों से छेड़छाड़ न करने का आदेश दिया। सारे बन्दर पेड़ों की ओर चल दिये, पर वह शैतान बन्दर सबकी नजर बचाकर पीछे रह गया और लगा अड़ंगेबाजी करने।

उसकी नजर अधचिरे लट्ठे पर पड़ी। बस, वह उसी पर पिल पड़ा और बीच में अड़ाये गये कीले को देखने लगा। फिर उसने पास पड़ी आरी को देखा। उसे उठाकर लकड़ी पर रगड़ने लगा। उससे किर्रर्र-किर्रर्र की आवाज निकलने लगी तो उसने गुस्से से आरी पटक दी। उन बन्दरों की भाषा में किर्रर्र-किर्रर्र का अर्थ 'निखट्टू' था। वह दोबारा लट्ठे के बीच फंसे कीले को देखने लगा।

उसके दिमाग में कौतुहल होने लगा कि इस कीले को लट्ठे के बीच में से निकाल दिया जाये तो क्या होगा? अब वह कीले को पकड़कर उसे बाहर निकालने के लिये जोर आजमाईश करने लगा। लट्ठे के बीच फंसाया गया कीला तो दो पाटों के बीच बहुत मजबूती से जकड़ा गया होता हैं, क्योंकि लट्ठे के दो पाट बहुत मजबूत स्प्रिंग वाले क्लिप की तरह उसे दबाये रहते हैं।

बन्दर खूब जोर लगाकर उसे हिलाने की कोशिश करने लगा। कीला जोर लगाने पर हिलने व खिसकने लगा तो बन्दर अपनी शक्ति पर खुश हो गया। वह और जोर से खौं-खौं करता कीला सरकाने लगा। इस धींगामुश्ती के बीच बन्दर की पूँछ दो पाटों के बीच आ गयी थी, जिसका उसे पता ही नहीं लगा।

उसने उत्साहित होकर एक जोरदार झटका मारा और जैसे ही कीला बाहर खिंचा, लट्ठे के दो चिरे भाग फटाक से क्लिप की तरह जुड़ गये और बीच में फंस गयी बन्दर की पूँछ। बन्दर चिल्ला उठा। तभी मजदूर वहाँ लौटे। उन्हें देखते ही बन्दर ने भागने के लिये जोर लगाया तो उसकी पूँछ टूट गयी। वह चीखता हुआ टूटी पूँछ लेकर भागा।

**शिक्षा : बड़ों के द्वारा दी गयी शिक्षा हमेशा काम आती है इसलिये हमें बड़ों के द्वारा दी गयी शिक्षा पर हमेशा पालन करना चाहिये।**

# बाल-प्रश्नोत्तरी

**01. दुनिया में कितने महाद्वीप हैं ?**
(क) छः (ख) सात
(ग) पाँच (घ) ग्यारह

**02. ट्रेन को रोकने के लिये किस रंग के झण्डे का प्रयोग करते हैं ?**
(क) पीला (ख) हरा
(ग) लाल (घ) नीला

**03. दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा कौन सी है?**
(क) स्टेचू ऑफ लिबर्टी
(ख) स्टेचू ऑफ यूनिटी
(ग) दोनों
(घ) इनमें से कोई नहीं

**04. एम्बुलेंस का उपयोग किस लिये किया जाता है ?**
(क) मेडिकल इमरजेंसी के लिये
(ख) सामान ढ़ोने के लिये
(ग) पुलिस वाहन के रूप में
(घ) यातायात के लिये

**05. भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव कौन-सा है ?**
(क) गंगा डॉलफिन
(ख) ब्लू व्हेल
(ग) स्पर्म व्हेल
(घ) व्हेल शार्क

**06. हिन्दू नवसंवत्सर कब प्रारम्भ होता है?**
(क) आश्विन शुक्ल प्रतिपदा
(ख) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
(ग) एक अप्रैल
(घ) एक जनवरी

**07. युधिष्ठिर का राज्याभिषेक दिवस कब होता है ?**
(क) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
(ख) चैत्र शुक्ल द्वितीया
(ग) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
(घ) चैत्र शुक्ल चतुर्थी

# हम आज प्रगति की ओर चले

हम आज प्रगति की ओर चले।।
उर में जननी की अमर भक्ति,
भर नस-नस में उत्साह नया,
पग में तूफानों की गति ले
हम आज प्रगति की ओर चले ।।1।।

हैं घोर निराशा के बादल,
छाये स्वदेश-गगनांगन में,
घिर रही घोर रजनी काली
हम ले प्रकाश की ज्योति चले ।। 2 ।।

गा गंगा-यमुना के गायन,
केसरिया बाना पहन-पहन,
सुख और शान्ति के लिये आज
हम सूर्यकेतु ले हाथ चले ।। 3।।

केशव की पावन संस्मृति ले,
बन संघ कार्य के अनुगामी,
माँ का मन्दिर जो ध्वस्त पड़ा
उसकी नव-रचना हेतु चले ।।4।।

हैं जाग उठे भारत माँ के अब
सच्चे वीर पुजारी सब,
हँस-हँस कर जीवन-कुसुम चढ़ा
हम माँ के पूजन हेतु चले ।।5।।



उत्तर : 1.(ख), 2.(ग), 3.(ख), 4(क), 5.(क), 6.(क), 7.(ग)

चैत्र कृष्ण द्वादशी-चैत्र शुक्ल त्रयोदशी : विक्रम संवत्-2083

## व्रत-पर्व

| | |
|---|---|
| 16 मार्च | मासिक शिवरात्रि , प्रदोष व्रत |
| 19 मार्च | विक्रम संवत 2083 प्रारम्भ<br>चैत्र नवरात्रि प्रारम्भ, गुड़ी पड़वा |
| 21 मार्च | मत्स्य जयंती |
| 22 मार्च | विनायक चतुर्थी, शक संवत 1948 प्रारम्भ |
| 26 मार्च | दुर्गाष्टमी |
| 27 मार्च | श्रीरामनवमी, तुकाराम जयन्ती |
| 29 मार्च | कामदा एकादशी |
| 30 मार्च | प्रदोष व्रत |

## स्मरणीय तिथियाँ

| | |
|---|---|
| 16 मार्च (जयन्ती) | बिपिन रावत |
| 16 मार्च (पुण्यतिथि) | अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध',<br>साहित्यकार विजयानन्द त्रिपाठी |
| 17 मार्च (जयन्ती) | कल्पना चावला |
| 21 मार्च (जयन्ती) | बिस्मिल्लाह ख़ाँ |
| 22 मार्च (पुण्यतिथि) | हनुमान प्रसाद पोद्दार |
| 23 मार्च (जयन्ती) | बसंती देवी, राम मनोहर लोहिया |
| 23 मार्च (पुण्यतिथि) | भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु |
| 25 मार्च (पुण्यतिथि) | गणेशशंकर विद्यार्थी |
| 26 मार्च (जयन्ती) | महादेवी वर्मा, कुबेरनाथ राय |
| 28 मार्च (जयन्ती) | गणितज्ञ गोरख प्रसाद |
| 28 मार्च (पुण्यतिथि) | गुरु अंगद देव |
| 29 मार्च (जयन्ती) | भवानी प्रसाद मिश्र |
| 29 मार्च (पुण्यतिथि) | सियारामशरण गुप्त |
| 30 मार्च (पुण्यतिथि) | गुरु हर किशन सिंह |
| 31 मार्च (जयन्ती) | गुरु अंगद देव, रमा शंकर व्यास |
| 31 मार्च (पुण्यतिथि) | श्यामजी कृष्ण वर्मा |

## पाक्षिक राशिफल

ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी
निदेशक- उत्थान ज्योतिष एवं अध्यात्म संस्थान

### मेष राशि-

भौतिक संसाधनों में वृद्धि होगी। आर्थिक पक्ष मजबूत होगी। घर गाड़ी जमीन का सुख बढ़ेगा। राजनीतिक लाभ में वृद्धि होगी। दूरस्थ यात्रा पर खर्च बढ़ेगा।

### वृषभ राशि-

आर्थिक पक्ष में मजबूती आयेगी। क्रोध में वृद्धि होगी। संघर्ष में वृद्धि होगी। सन्तान पक्ष से थोड़ी चिन्ता होगी। कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। दाम्पत्य जीवन में सुधार।

### मिथुन राशि-

परिश्रम एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सरकारी तंत्र से लाभ बढ़ेगा। क्रोध में वृद्धि होगी। मनोबल में अचानक कमी आयेगी। दाम्पत्य जीवन में सुधार होगा। प्रेम सम्बन्धों में वृद्धि होगी। हृदय रोग अथवा सीने की समस्या।

### कर्क राशि-

वाणी की कटुता में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों को लेकर चिन्ता बढ़ेगी। पेट एवं पैर की समस्या के कारण तनाव होगा। संतान के प्रति चिन्ता बढ़ेगी। वाहन सुख बढ़ेगा

### सिंह राशि-

आर्थिक प्रगति होगी। सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। अति घनिष्ठ से तनाव होगा। वाणी की तीव्रता में वृद्धि। अचानक खर्चे में वृद्धि भी होगी। मनोबल में थोड़ी कमी महसूस होगी।

### कन्या राशि-

प्रतियोगिता में विजय प्राप्त होगा। आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा। पैर में चोट अथवा दर्द हो सकता है। मानसिक चिंतन में वृद्धि होगी। रोजगार में अवरोध उत्पन्न होगा।

### तुला राशि-

दूरस्थ यात्रा का योग बनेगा। प्रतियोगिता में एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा। सन्तान के प्रति सामान्य तनाव रहेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नौकरी में परिवर्तन सम्भव।

### वृश्चिक राशि-

घर, गाड़ी, जमीन का सुख बढ़ेगा। अचानक धन लाभ की स्थिति बनेगी। पैतृक सम्पत्ति को लेकर तनाव बढ़ सकता है। माता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता बढ़ेगी।

### धनु राशि-

पराक्रम, पुरुषार्थ एवं सामाजिक दायरे में वृद्धि होगी। सरकारी तंत्र से लाभ बढ़ेगा। हृदय रोग अथवा सीने की तकलीफ में वृद्धि हो सकती है। मनोबल में वृद्धि होगी।

### मकर राशि-

पारिवारिक कार्यों को लेकर चिन्ता बढ़ेगी। पेट की समस्या के कारण तनाव बढ़ेगा। पैर में चोट लग सकती है। भाई-बहन तथा मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। राजनीतिक लोगों को विशेष लाभ मिलेगा।

### कुम्भ राशि-

पारिवारिक कार्य में सुविधा आयेगी। अचानक खर्च बढ़ेगा। मानसिक चिन्तन में वृद्धि होगी। अति घनिष्ठ व्यक्ति से तनाव बढ़ेगा। आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा। जीवन साथी से स्नेह एवं लाभ प्राप्त होगा।

### मीन राशि-

मानसिक द्वंद्व में वृद्धि होगा। नींद में कमी आयेगी। मनोबल में उच्चता बनी रहेगी। सामाजिक पद प्रतिष्ठा एवं सम्मान में वृद्धि होगा। नौकरी में परिवर्तन होगा। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।

RNI. No. UPHIN/2015/65982 डाक पंजी. क्र. एस.एस.पी./ल.डब्ल्यू./अन.पी.-511/2025-27 प्रेषण तिथि : 05, 06 व 20, 21 (प्रत्येक माह)

युगाब्ध-५१२८

# विक्रम संवत्-२०८३

# चैत्र-शुक्ल-प्रतिपदा

अवध प्रहरी परिवार की ओर से
देशवासियों को नव संवत्सर की
हार्दिक शुभकामनाएँ